ADITYA INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY

www.adityainstitute.org

Digital Financial Tools and Applications

(डिजिटल वित्तीय टूल्स और एप्लीकेशन्स)

Introduction (प्रस्तावना)

डिजीटल उपकरणों जैसे-मोबाइल और लैपटाप की मदद से वित्तीय सेवाओं का उपयोग डिजीटल वित्तीय सेवा कहलाता है। इन सेवाओं के अंतर्गत भुगतान, बचत, क्रेडिट, प्रेषण और बीमा आते हैं। यह सेवाएँ साल के 365 दिन 24*7 उपलब्ध हैं। किसी भी डिजीटल वित्तीय सेवा के तीन घटक होते हैं। पहला डिजीटल ट्रांजैक्शन प्लेटफार्म जो एक ऐसा माध्यम है जिसमें ग्राहक सभी वित्तीय लेन-देन एक डिवाइस के द्वारा करते हैं। दूसरा, रिटेल एजेंट्स जो एक माध्यम तैयार करते हैं जिसमें सभी इलेक्ट्रानिक लेन-देन होते हैं और अन्त में, डिवाइसेस जिसमें आपका मोबइल फोन भी हो सकता है जो एक POS टर्मिनल से जुड़ा हो सकता है और इसके माध्यम से पेमेन्ट्स किये जा सकते हैं।

Objectives (उद्देश्य)

डिजिटल वित्तीय सेवाएँ (Digital Financial Services - DFS) आधारभूत वित्तीय सेवाओं को गरीबों तक नवीनतम तकनीकों-मोबाइल योग्य प्रोग्राम, इलेक्ट्रॉनिक मुद्रा उपकरण और डिजिटल भुगतान प्लेटफार्म आदि के द्वारा पहुँचा सकती हैं। डिजिटल चैनल ग्राहकों तथा सेवा दाताओं के लिए लागतों में भारी कमी कर सकता है, जिससे दूरस्थ तथा वंचित लोगों तक सेवाएँ पहुँचना सुगम हो जाता है। पूरे विश्व के वित्तीय नियामकों ने यह महसूस किया है कि DFS वित्तीय समावेशन में अहम भूमिका निभा सकती है और साथ ही साथ इसके सम्भावनाओं में वृद्धि के लिए अनुकूल वातावरण बनाने मे लगे हैं। DFS के चैनल 24 × 7 × 365 सेवाएँ प्रदान करते है।

बचत क्यों जरुरी है ? (Why Savings are needed?):

आय का वह भाग, जो खर्च नही किया जाता बचत कहलाता है। भविष्य के अनिश्चित होने के कारण कोई भी अशुभ घटना या आपातकाल की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। बिना बचत के ऐसी अनिश्चित घटनाएँ बड़ी वित्तीय संकट को जन्म देती हैं। बचत एक व्यक्ति या परिवार को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है।

सुरक्षा के लिए (For Safety):

बचत के कारणों में से एक महत्वपूर्ण कार्य सुरक्षा है। आपातकाल की स्थिति के लिए बचत बहुत महत्वपूर्ण है। बहुत छोटे आपात की स्थिति, जैसे कार रिपेयर भी बचत किए हुए पैसों से पूरा किया जाता है। ऐसा नहीं कि वर्तमान आय को ऐसी स्थित में पूरी तरह से खर्च कर दिया जाता है।

भविष्य की आवश्यकता के लिए (For Future Needs):

बच्चों की शिक्षा के लिए भी बचत बहुत महत्वपूर्ण है। जीवन का आनन्द लेने के लिए भी बचत जरूरी है। डिज्नी वर्ल्ड की ट्रिप बहुत आनन्ददायक होती है। जब आपको पता होता है कि आपने बचत के पैसों से भुगतान किया है, बजाय इसके कि क्रेडिट कार्ड का उपयोग कर वर्षों तक उसका भुगतान करते रहें।

बड़े खर्चो के लिए (For Large Expenses):

जीवन में बहुत ऐसे खर्चे होते हैं, जो बड़े होते हैं, जिन्हें पूरा करने के लिए नियमित रूप से बचत जरूरी है। एक विवाहित दम्पति के कुछ सपने होते हैं, जैसे विदेश घूमना, वार्षिक भ्रमण, मकान खरीदना या व्यवसाय/कम्पनी प्रारम्भ करना।

घर पर नकदी रखने के नुकसान:

(Drawbacks of Keeping Cash at Home)

कुछ लोग नकदी को बैंक में रखने के बजाय घर पर रखने में विश्वास करते हैं। घर पर नकदी रखने के कुछ नुकसान है।

असुरक्षित (Unsafe):

अपने नकदी को बैंक से निकालकर घर पर रखे। इसमें यह फायदा है कि आपने अपने पैसों को अपने घर पर छुपाकर रख दिया और जब जरूरत हो उसे प्रयोग कर सकते हो। पर नकदी को घर पर रखने का यह नुकसान है कि उसकी चोरी हो सकती है।

विकास के अवसर खोना:

(Loss of growth Opportunities)

अपने पैसों को घर पर रखने का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि हम विकास के अवसर खो देते हैं, क्योंकि इस पर हम कोई ब्याज नही कमा पाते। यदि हम पैसों को बैंक में रखें, तो हमें एक निश्चित रकम ब्याज के रूप में मिलती है, जिसे जरूरत पड़ने पर हम उपयोग कर सकते है।

कोई साख योग्यता नहीं:

(No Any Credit Eligibility)

साख योग्यता का अर्थ है कि बैंक में बचत के कारण अन्य फायदों का लाभ उठाना, जैसे-डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, ATM की सुविधा, ऋण की सुविधा आदि। घर नकदी रखने पर इन सभी सुविधाओं का लाभ नहीं मिल पाता।

क्यों बैंक की जरूरत है?

(Why Bank is Needed?)

बैंक (Bank) उस वित्तीय संस्था को कहते हैं जो जनता से धनराशि जमा करने तथा जनता को ऋण देने का काम करती है। लोग अपनी बचत राशि को सुरक्षा की दृष्टि से अथवा ब्याज कमाने के हेतु इन संस्थाओं में जमा करते और आवश्यकतानुसार समय-समय पर निकालते रहते हैं।

अत: बैंक केवल मुद्रा का लेन देन ही नहीं करते, वरन् साख का व्यवहार भी करते हैं। इसलिए बैंक को साख का सृजनकर्ता भी कहा जाता है। बैंक देश की बिखरी सम्पति को केन्द्रित करके देश में उत्पादन के कार्यों में लगाते हैं। जिससे पूँजी निर्माण को प्रोत्साहन मिलता है और उत्पादन की प्रगति में सहायता मिलती है।

जमा की सुरक्षा (Safety of Deposits):

बैंक को पैसा जमा करने के लिए एक सुरक्षित जगह के रूप में देखा जाता है। यह अव्यावहारिक और जोखिम भरा नकदी के रूप में अपने सभी बचत रखने के लिए है। यह लोगों के पैसे को अक्सर जल्दी भुगतान और सम्पति को सुरक्षित रखने के लिए है।

बैंकिंग उत्पाद (Banking Products):

खातों के प्रकार (Types of Accounts)- ये निम्न प्रकार के होते हैं -

बचत खाता (Saving Account):

- इस प्रकार का खाता प्राय: उन व्यक्तियों के लिए उपयुक्त होता है, जो कभी-कभी तथा बहुत छोटी-छोटी मात्राओं में रुपया जमा करना या निकालना चाहते हैं।
- बचत खाता मुख्यत: निश्चित एवं कम आय वाले गृहस्थों की सुविधा के लिए तथा उनमें धन संचय की प्रवृत्ति जाग्रत करने के लिए खोला जाता है।
- इस प्रकार के खातों में से आवश्यकतानुसार, जितनी बार चाहे, रुपया निकाला जा सकता है। इसमें भी जमा की कोई निश्चित अवधि नहीं होती। इस खाते में रकम जमा करने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है, लेकिन जमा की अधिकतम सीमा निश्चित है।

स्थायी खाता (Permanent Account):

अमेरिका में इसे **मियादी जमा** (Time deposit) कहा जाता है। इस खाते में एक निश्चित अवधि के लिए रकम जमा की जाती है। स्थायी खाता बचत खाता की तुलना में अधिक ब्याज देता है। जितने समय के लिए रकम जमा की गई है, उतना समय बीत जाने पर ही निकासी हो सकती है।

निश्चित अवधि के भीतर ही निकासी करना आवश्यक हो जाता है, तब स्थायी जमा की जमानत पर कर्ज मिल जाता है। खाता पहले बन्द करने पर, जिस शर्त पर रुपया जमा किया गया था, उसका पालन नहीं होता। ब्याज उस समय जो रहता है, वही मिलता है।

चालू खाता (Current Account):

इस खाते में जमा करने वालों को अधिकार है कि वे अपनी इच्छानुसार धन को निकाल सकते हैं एवं जमा कर सकते हैं, इसलिए अमेरिका में इसे माँग जमा भी कहा जाता है। बैंक इस प्रकार के खातों पर जमा हेतु कोई ब्याज नहीं देते एवं एक निश्चित राशि से कम जमा पर जमाकर्ता से व्यय वसूल करते हैं।

नकद साख खाता (Cash Credit Account):

यह एक ऋण खाता है। इस खाते के अन्तर्गत बैंक खाताधारी को एक निश्चित मात्रा तक ऋण प्राप्त करने का अधिकार देता है। इसी सीमा के अन्दर ऋणी अपनी आवश्यकतानुसार बैंक से रुपया लेता है और जमा भी करता है। ब्याज उसी राशि पर वसूल किया जाता है, जो वास्तव में ऋणी के पास रहती है।

आवर्ती जमा खाता (Recurring Deposit Account):

इस प्रकार के खातों में, एक निश्चित राशि प्रतिमाह, एक निश्चित अवधि के लिए जमा कराई जाती है। बिना किसी असाधारण परिस्थिति के इसमें से रकम को, निश्चित अवधि के पूर्ण होने से पहले निकाला नहीं जा सकता। इन पर दिया जाने वाला ब्याज, जमा खाते की तुलना में अधिक होता है।

ऋण (Loan):

वाणिज्यिक बैंक का अन्य महत्वपूर्ण कार्य ऋण देना है। बैंक अपने ग्राहकों, उत्पादकों व व्यापारियों आदि को विभिन्न प्रकार की जमानतों पर ऋण देते हैं, ये ऋण अचल सम्पतियाँ, व्यक्तिगत जमानत के आधार पर नहीं दी जाती। वाणिज्यिक बैंक निम्नलिखित प्रकार के ऋण देते हैं-

(a) ओवर ड्राफ्ट (OD) - चालू खाता वाले जमाकर्ता को उनके खाते में जमा रकम से अधिक राशि निकालने की सुविधा।

(b) ऋण तथा अग्रिम (Debt and Loan)

(c) विनिमय-पत्रों की कटौती (Retrenchment of Exchange Bills)

(d) नकद (Cash Credit)

(e) सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश (Investment in Public Securities)

ऋण एवं ओवरड्राफ्ट के प्रकार (Types of Loan and Overdrafts):

ऋण लेने की परम्परा भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही रही है। किसी भी व्यक्ति द्वारा ऋण तब लिया जाता है, यदि उसे घर खरीदना हो, उच्च शिक्षा प्राप्त करनी हो, गाड़ी खरीदनी हो इत्यादि। ऋण आर्थिक क्रियाकलापों के लिए भी दिया जाता है। यथा- कृषि के क्षेत्र में, व्यावसाय स्थापित करने के क्षेत्र में एवं सेवा क्षेत्र से सम्बन्धित व्यावसाय इत्यादि में बैंक द्वारा ऋण बहुत न्यूनतम दर पर उपलब्ध कराया जाता है।

भारत में लोन तीन प्रकार के दिए जाते हैं-

1. अल्पकालिक लोन (ऋण) (Short term loan) - यह ऋण (लोन) एक वर्ष से कम अवधि के लिए दिया जाता है।
2. मध्यकालिक (Medium term loan) —एक वर्ष से तीन वर्ष की अवधि के बीच के लिए दिया जाता है।
3. दीर्घकालिक लोन (Long term loan)- यह ऋण तीन वर्ष से ऊपर की अवधि के लिए दिया जाता है।

1. होम लोन (Home Loan):

घर से सम्बन्धित जो लोन लिया जाता है, सामान्यतय: होम लोन कहा जाता है। इसके अन्तर्गत घर खरीदना, घर बनाना, घर का पुनर्निमाण (Renovation) इत्यादि आता है। यह लोन निर्धारित ब्याज दर पर दी जाती है। बैंक कुल लागत का 75 से 80% तक ऋण देती हैं। लोन चुकाने की अवधि 5 वर्ष से 20 वर्ष तक हो सकती है।

2. व्यक्तिगत ऋण (Personal Loan):

किसी व्यक्ति द्वारा अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए लिया गया लोन, व्यक्तिगत लोन कहलाता है। यह लोन मुख्यत: कर्ज चुकाने के लिए, चिकित्सा उपचार के लिए, बच्चों की फीस भरने के लिए, यात्रा के लिए तथा विवाह सम्बन्धी गतिविधि इत्यादि के लिए लिया जाता है। व्यक्तिगत लोन का ब्याज दर प्रत्येक बैंक का अलग-अलग होता है। यह लोन किसी व्यक्ति के व्यवसाय या पेशा के आधार पर दिया जाता है। व्यक्तिगत लोन चुकाने की अधिकतम अवधि 4 वर्ष तक होती है।

3. शिक्षा ऋण (Education Loan):

यह लोन विशेषकर उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक अध्ययन के लिए दिया जाता है। यह लोन लेने के लिए गारण्टर (Guarenter) की आवश्यकता होती है, जो अभिभावक या कोई रिश्तेदार हो सकता हैं। यह देश के अन्दर एवं बाहर (Abroad) दोनों के लिए दिया जाता है। सामान्यत: देश के अन्दर पढ़ने के लिए दस लाख तथा विदेशों में पढ़ने के लिए बीस लाख दिया जाता है।

4. कॉर्पोरेट लोन (Corporate Loan):

जब बैंक बड़े व्यावसायिक कम्पनियों को ऋण देती है तो वह कॉर्पोरेट लोन कहलाता है। कोई भी बैंक अपने अपने कोर कैपिटल (Core Capital) का 55% तक किसी बड़ी कम्पनी को लोन दे सकती है।

5. वाहन या कार लोन (vehicle & Car Loan):

व्यक्ति पुरानी या नई (old & new) गाड़ी खरीदने के लिए बैंक से जो लोन लेता है, वह वाहन या कार लोन कहलाता है। कार लोन के सन्दर्भ में प्रत्येक बैंक की ब्याज दर अलग-अलग होती है। इस ऋण को चुकाने के लिए बैंक ग्राहकों को EMI (Equated Monthly Installments) की सुविधा देती है या कोई ग्राहक चाहे तो समय से पूर्व भी लोन को चुका सकता है।

6. गोल्ड लोन (Gold Loan):

गोल्ड लोन बैंक में सोना रखने के बदले में नकद (cash) लेने की प्रक्रिया है। यहाँ लोन लेन के लिए बैंक में सिक्योरिटी (security) के रूप में सोना रखना होता हैं। इस लोन पर लिया गया ब्याज दर पर्सनल लोन की तुलना में कम होता है। इस सन्दर्भ में प्रत्येक बैंक की ब्याज दर अलग-अलग होती है।

7. टर्म लोन (Term Loan):

यह लोन निर्धारित समय अवधि के लिए एवं उपयुक्त (applicable) ब्याज दर पर दिया जाता है। यह लोन अल्पकालिक अवधि (तीन वर्ष तक) तथा दीर्घकालिक अवधि (10 से 15 वर्ष तक) के लिए दिया जाता है।

8. प्रोपर्टी लोन (Property Loan):

प्रोपर्टी लोन वह लोन है, जो बैंक आपकी प्रोपर्टी के कागजात (document) को गिरवी (mortgage) रख के देता है। इस लोन को चुकाने की अवधि अधिकतम 15 वर्ष होती है। प्राय: लोन की रकम/राशि कागजात में अंकित राशि का 40 - 60% होता है।

ओवर ड्राफ्ट (Overdrafts):

यह लोन का एक प्रकार होता है, जब बैंक खाते से उपलब्ध शेष राशि से अधिक राशि की निकासी (withdrawl) होती है तो यह प्रक्रिया ओवरड्राफ्ट कहलाती है। ओवरड्राफ्ट राशि तभी निकाली जाएगी, जब ग्राहक एवं बैंक के बीच कुछ नियमों एवं शर्तों (terms and conditions) पर सहमति होगी। उदाहरणस्वरूप यदि आपके चालू खाते (Current Account) में रु 10,000 हो और आपने रु 20,000 की निकासी किया हो (नियमों एवं शर्तों के अनुरूप) तो यह ओवरड्राफ्ट का उदाहरण है।

चेक एवं डिमांड ड्राफ्ट को भरना:

(Filling up of cheque, demond Draft)

चेक को कैसे भरते हैं? (How to Fill Cheques?)

चेक भरते समय किसी व्यक्ति को तिथि (date), व्यक्ति का नाम, (जिसे payee करना हो), तथा राशि (amount) को शब्दों (words) में भरना, इत्यादि करना पड़ता है।

नोट :

1. अपने हस्ताक्षर (signature) करने के बाद लेन-देन (transaction) के पास (approve) किया जाता है।
2. एम.आई.सी.आर. (Magnetic Ink Character Recognition) बैंड (Band) के ऊपर हस्ताक्षर (signature) नहीं करें।
3. चेक भरते समय कभी भी overwrite एवं cutting (काटना) नहीं करें।
4. चेक भरते समय तिथि (date) डालना (put) नहीं भूलें।
5. चेक का रिकॉर्ड रखें, अर्थात् चेक का वह भाग, जिसे किसी को देने के पश्चात् चेक के अग्र भाग में निहित होता है।

चेक(Cheque):

चेक एक प्रकार से विनिमय हुण्डी (Bill of Exchange) होती है, जो एक निर्दिष्ट (विशिष्ट) बैंक के ऊपर आहरित होती है तथा माँग पर ही, जिसका भुगतान किया जाता है।

चेक में तीन पक्ष होते हैं-

(i) भुगतान का आदेश देने वाला, आहर्ता (Drawer),

(ii) जिसको आदेश दिया जाता है (Drawee) अर्थात् बैंक

(iii) जो भुगतान प्राप्त करता है अर्थात् चेक का धारक (Payee)

1. चेक के प्रकार) Types of Cheque)

बैंक के द्वारा अपने जमाकर्ताओं को चेक जारी करने का अधिकार दिया जाता है।

इसके निम्नलिखित प्रकार हैं-

साधारण या धारक चेक (Bearer Cheque) - चेक का भुगतान चेक प्रस्तुत करने वाले किसी भी व्यक्ति को किया जा सकता है, भले ही वह चेक उसके नाम से हो अथवा नहीं। भुगतान चेक के धारक को ही दिया जाता है।

आदिष्ट चेक (Order Cheque) - जब किसी धारक चेक में से धारक (Bearer) शब्द को काट दिया जाए अथवा उस चेक पर Order लिख दिया जाए, तो वह चेक आदिष्ट चेक बन जाता है। -

खुला चेक (Open Cheque) - ऐसे चेक, जो रेखांकित नहीं होते हैं और यदि रेखांकित हुए तो उसे पूर्णरूप से काटकर पूरे हस्ताक्षर के साथ प्रस्तुत किए जाते हैं।

पावक खाता चेक (Account Payee Cheque) - जब किसी चेक के प्राय: बाईं ओर ऊपर कोने में दो समान्तर रेखाओं के मध्य 'Account Payee Only' लिख दिया जाता है, तो उस चेक को पावक चेक कहते हैं। इस चेक का भुगतान केवल उसी व्यक्ति या प्रतिष्ठान अथवा संस्थान के खाते में जमा करके किया जाता है।

विशिष्ट रेखांकित चेक (Special Crossed Cheque) - जब चेक के मुख पृष्ठ पर दो समानान्तर रेखाओं के मध्य किसी बैंक का नाम लिख दिया जाता है, तो यह चेक विशिष्ट रेखांकित चेक बन जाता है।

उपहार चेक (Gift Cheque) - अपने प्रियजनों को उपहारस्वरूप दिए जाने वाले चेक को गिफ्ट चेक कहते है। ऐसे चेक शादी, बर्थ डे आदि में उपयोग किये जाते हैं।

यात्री चेक (Traveller's Cheque) - इस चेक का भुगतान देशभर में सम्बन्धित बैंक की किसी भी शाखा से प्राप्त किया जा सकता है।

पूर्व दिनांकित चेक (Pre-dated Cheque) - यदि आहरणकर्ता चेक लिखने की तारीख से पहले की कोई तारीख चेक पर लिखता है, तो ऐसे चेक को पूर्व दिनांकित (Pre-dated) चेक कहा जाता है।

गतावधि अथवा पुराना चेक (Stale Cheque) - यदि चेक जारी करने की तारीख के बाद वह चेक समुचित अवधि (वर्तमान में तीन महीने) के अन्दर भुगतान के लिए प्रस्तुत न किया जाए, तो उसे गतावधि अर्थात् पुराना चेक कहा जाता है।

उत्तर दिनांकित चेक (Post-dated Cheque) - यदि किसी चेक का आहरणकर्ता चेक लिखते समय उस पर कोई आगामी तारीख लिख देता है, तो ऐसे चेक को उत्तर दिनांकित (Post-dated) चेक कहा जाता है।

MICR चेक (Magnetic Ink Character Recognition) - MICR चेक में बैंड कोड लाइन पर चेक संख्या के अतिरिक्त 9 अंकों की एक संख्या भी मुद्रित रहती है, जिसके प्रथम तीन अंक केन्द्र/शहर को इंगित करते हैं। MICR चेक इलेक्ट्रॉनिक क्लीयरेन्स को सम्भव बनाते हैं। यह पद्धति भारत में वर्ष 1987 में लागू की गई। 9 अंकीय संख्या में मध्य के तीन अंक बैंक तथा अन्तिम बैंक की शाखा के कोड को बनाते हैं।

इन्हें भी जानें-

अब हमारे देश में भुगतान हेतु चेक उसके जारी करने की तारीख से 3 महीने के लिए वैध रहता है।

बैंक में नए खाते खोलने के लिए अधिवास प्रमाण-पत्र सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज होता है।

गरीबों या बच्चों के बीच लोकप्रिय 'पिगी बैंक' लघु बचत बैंक का एक रूप है।

मांग (डिमाण्ड) ड्राफ्ट कैसे भरते हैं?

(How to Fill/Demand Draft)

यदि आपको 40,000/- रूपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट बनाना है तो इसके लिए बैंक जाकर एक फॉर्म (Form) भरना होगा, जिसमें डिमाण्ड ड्रॉफ्ट से सम्बन्धित आवश्यक सूचना (Essential details) भरनी होगी। डिमाण्ड ड्रॉफ्ट जितने राशि का बनाना है, उसका भुगतान (payment) नकद या चेक के रूप में करना होगा। यदि आप भुगतान चेक (cheque) के रूप में करते हैं तो फॉर्म में चेक नम्बर लिखना होगा। डी.डी. फॉर्म पर, जिसके पक्ष में भेजना है, वह भरें तथा अपने हस्ताक्षर करें। भरने के बाद डी.डी. को चेक या नकद के साथ संलग्न कर पदधारी बैंक कर्मचारी (Designated Bank Employee) को सौप दें। फिर वह आपको पावती पत्र (Receipt) देगा। बैंक कुछ राशी कमीशन के रूप में लेती है, जो आपके खाते से कटेगा अथवा आप कैश में भुगतान करेंगे।

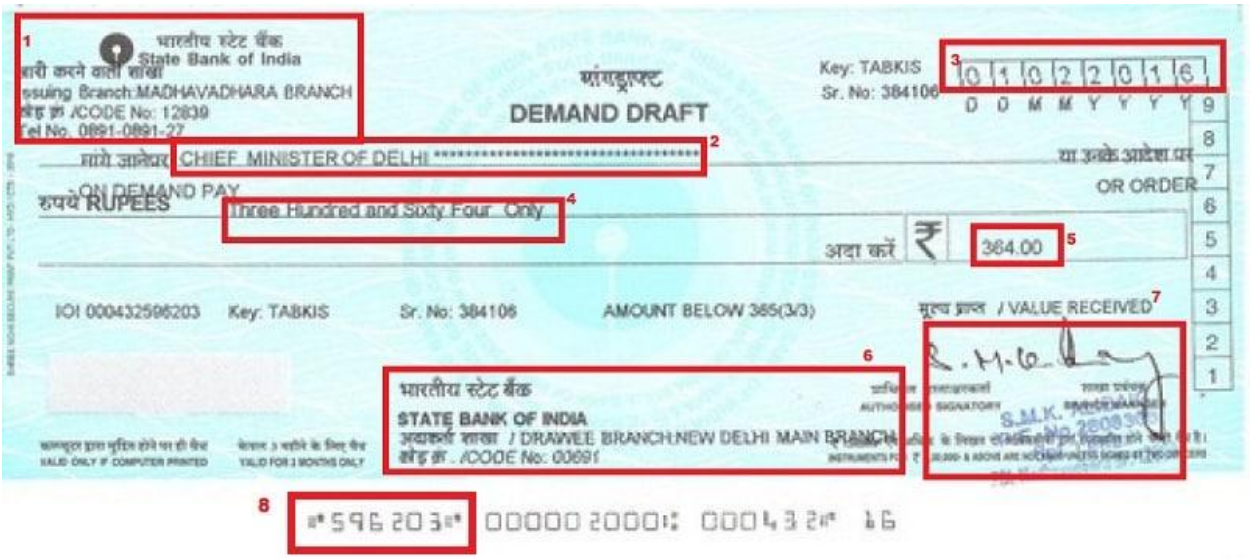

खाता खोलने के लिए आवश्यक दस्तावेज:

(Documents for Opening Account)

अपने ग्राहक को जानिए (Know Your Customer):

अपने ग्राहक को जानिए दिशा-निर्देशों का उपयोग ग्राहक पहचान प्रक्रिया के लिए किया जाता है। इसमें खातों के हितार्थी स्वामी की सही पहचान, निधि के स्रोत, ग्राहक के उद्योग का स्वरूप, ग्राहक के कारोबार के सम्बन्ध में खाते के परिचालन में उचितता इत्यादि शामिल हैं, जिससे बैंक को विवेकसम्मत जोखिम प्रबन्धन से सहायता मिलती है।

KYC छूट प्रक्रिया (Relaxed KYC Procedure):

नो फ्रील अकाउण्ट के तहत् व्यक्तिगत स्तर पर निम्न आय समूह के लोगों को KYC नियमों में छूट दी जाएगी। निम्न आय समूह के अन्तर्गत वह ग्राहक शामिल होंगे, जिनके अपने किसी भी खाते में (FDR/SB/CA) रु 50,000 से अधिक या सभी का कुल योग रु 1 लाख वार्षिक से अधिक न हो।

KYC के तहत् बैंक द्वारा माँगे जाने वाले दस्तावेज:

पहचान सत्यापित के लिए दस्तावेज:- पासपोर्ट, पैनकार्ड, मतदाता पहचान-पत्र, ड्राइविंग लाइसेन्स, पहचान-पत्र (बैंक की सन्तुष्टि की शर्त पर) बैंक की सन्तुष्टि के लिए मान्यता प्राप्त सरकारी प्राधिकारी या सरकारी कर्मचारी द्वारा पहचान तथा निवास को सत्यापित करते हुए पत्र ।

1. मुद्रा (Currency)

मानव जीवन में मुद्रा का महत्वपूर्ण योगदान है। आधुनिक मुद्रा के रूप में नोट एवं सिक्के को सम्मिलित किया जाता है। मुद्रा विनिमय का साधन है। इसे सर्वव्यापी रूप में भुगतान के लिए स्वीकार किया जाता है। भारत में रिज़र्व बैंक सिक्के एवं नोट जारी तथा वितरण करने के लिए अधिकृत है। इसके लिए RBI को भारत सरकार का एजेण्ट बनाया गया है।

मुद्रा की माप:

मुद्रा की पूर्ति के मापन पर विचार हेतु RBI ने सर्वप्रथम वर्ष 1961 में एक कार्यकारी समिति का गठन किया। इसके पश्चात् RBI द्वारा नियुक्त दूसरे कार्यकारी समूह ने अपनी रिपोर्ट वर्ष 1977 में प्रस्तुत की, जिसके आधार पर मुद्रा पूर्ति के सम्बन्ध में चार दृष्टिकोण प्रस्तुत किए गए।

RBI द्वारा चार वैकल्पिक मुद्रा आपूर्ति की माप दी गई, जो हैं-

M_1, M_2, M_3. तथा M_4

इन मापों की आनुभविक मापें-

M_1 = जनता की उपलब्ध चलन की मात्रा (चलन में नोट तथा सिक्के, बैंक के नकद कोष घटाकर) + बैंक की शुद्ध माँग जमा राशि + रिजर्व बैंक के पास अन्य जमा राशियाँ।

M_1 = C+DD+ OD (M, = Currency + Demand Deposit + other Deposit)

M_2 = M_1 + डाकखानों के बचत बैंक में बचत जमा राशियाँ

M_3 = M_1 + बैंक की कुल जमा राशियाँ

M_4 = M_3 + डाकघर की कुल जमा राशि

उपरोक्त चारों संघटकों में M_1 सबसे अधिक तरलता को प्रदर्शित करता है, इसे संकीर्ण मुद्रा (Narrow Money) कहते हैं तथा यह तरलता क्रमश: घटती जाती है और अन्तिम संघटक M_4 में सबसे कम तरलता पाई जाती है। दूसरे शब्दों में, जब हम M_1 से M_4 की ओर स्थानान्तरित होते हैं, वस्तुतः मुद्रा के विनिमय के माध्यम के रूप से उसके मूल्य संचय की ओर बढ़ते जाते हैं।

बैंक के लिए M_3 सर्वाधिक उपयोगी मुद्रा होती है, इसे विस्तृत मुद्रा (Broad Money) भी कहते हैं, क्योंकि बैंक द्वारा इसका दीर्घकालिक उपयोग किया जाता है।

भारतीय करेंसी प्रणाली:

(The Indian Currency System)

नोट के निर्गमन की यह विधि वर्ष 1956 से रिजर्व बैंक द्वारा स्वीकार की गई। वर्तमान समय से नोट जारी करने हेतु इसी प्रणाली को आधार बनाया गया है। इस प्रणाली के अनुसार, प्रचालन विभाग के पास स्वर्ण मुद्रा, स्वर्ण एवं विदेशी ऋण-पत्र कुल मिलाकर किसी समयर 200 करोड़ के मूल्य से कम नहीं होने चाहिए। इनमें स्वर्ण का मूल्य (धातु तथा मुद्रा मिलाकर) रु 115 करोड़ से कम नहीं होना चाहिए। इस वर्तमान समर्थन व्यवस्था को न्यूनतम प्रारक्षण प्रणाली (Minimum Reserve System) या न्यूनतम आरक्षित निधि प्रणाली कहते हैं।

भारत में रुपया का चिन्ह (रु) का उपयोग 15 जुलाई, 2010 से शुरू हुआ।

यह चिन्ह डी० उदयकुमार ने बनाया।

टकसाल:

सिक्कों का उत्पादन करने तथा सोने और चाँदी की परख करने एवं तमगों का उत्पादन करने के लिए भारत सरकार की चार टकसालें मुम्बई, कोलकाता, हैदराबाद तथा नोएडा में स्थित हैं।

इन्हें भी जानें-

संगठित क्षेत्र में भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) शीर्ष संस्था है। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, निजी क्षेत्र के बैंक, विदेशी बैंक तथा अन्य वित्तीय संस्थाएँ आती हैं।

भारतीय स्टेट बैंक रिज़र्व बैंक के प्रतिनिधि के रूप में उन जगहों पर काम करता है, जहाँ रिज़र्व बैंक ऑफ इण्डिया का कोई कार्यालय नहीं है।

भारतीय रिज़र्व बैंक का वित्तीय वर्ष 1 जुलाई से 30 जून तक होता है।

पत्र मुद्रा पर नई भाषा:

प्रधानमंत्री कार्यालय के द्वारा रिज़र्व बैंक के मुद्रा विभाग को नए निर्देश जारी किए गए हैं कि मैथिली के साथ-साथ मणिपुरी, संथाली, डोगरी और बोडो भाषा का अंकन भी रुपये के नोटों पर किया जाए। अभी तक भारतीय रुपये में 17 भाषाओं में ही रुपये का मूल्य लिखा जाता है, जबकि भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है।

2. 2000 रूपये के नए नोट और उनकी विशेषताएँ

(Features of New Rs. 2000 Notes)

नए बैंक नोट्स-2000 रुपये के अंकित मूल्य वाले नोट- रिज़र्व बैंक ऑफ इण्डिया ने महात्मा गाँधी (नई) सीरीज के तहत जारी किए हैं। नए नोट्स पर पीछे की तरफ मंगलयान की तस्वीर है।

यह नोट मुख्य रूप से मैजेंटा रंग के हैं। इस नोट पर अन्य ज्यामितीय पैटर्न और डिजाइन भी हैं, जो नोट की समूची कलर स्कीम के साथ मेल खाती है। यह दोनों ही तरफ लागू होता है।

नया नोट 66 मिमी गुणा 166 मिमी का होगा।

नोट्स पर छोटे अक्षरों में 2000 और RBI भी लिखा है। साथ ही सुरक्षा धागे पर भारत, 2000 और RBI लिखा है। यह सुरक्षा धागा हिलाने पर हरे से नीले रंग का हो जाएगा।

नोट को बनाने में यह भी ध्यान दिया गया है कि कोई नेत्र या दृष्टिहीन भी नोट को हाँथ में पकड़ने पर उसका मूल्य बता सके। महात्मा गाँधी का पोट्रेट, पहचान का चिह्न और अशोक पिलर का चिह्न ऊपर उठे हुए होंगे।

पीछे की तरफ, वह वर्ष प्रिंट होगा, जिस वर्ष में यह नोट प्रिंट हुआ होगा। उस पर स्वच्छ भारत का लोगो और स्लोगन भी होगा। लैंग्वेज पैनल नोट के बीच में होगी।

500 रूपये के नए नोट और उनकी विशेषताएँ

नए नोट्स रंग, सिक्योरिटी कम्पोनेंट्स, साइज, एलिमेंट्स और थीम के लिहाज से पुराने नोट्स से काफी अलग है।

नए नोट्स का आकार 63 मिमी गुणा 150 मिमी है। यह नोट ग्रे कलर के है।

यह हमारी विरासत का अभिन्न हिस्सा है। राष्ट्रीय ध्वज भी इस नोट पर हैं।

नए नोट में महात्मा गाँधी की छवि की स्थिति और ओरिएंटेशन पुराने नोट से अलग है।

नोट को आड़ा-तिरछा करने पर सिक्योरिटी धागा फीचर हरे से नीला रंग में बदलेगा। नोट के दाएँ हिस्से में गारंटी क्लॉज, RBI, अशोक स्तम्भ का चिह्न और सम्बन्धित गवर्नर के हस्ताक्षर के साथ ही वचन भी होगा।

नोट के दाएँ हिस्से में नीचे की तरफ अंकों में उसकी कीमत होगी। जो हरे से नीले रंग में बदलेगा। अशोक स्तम्भ दाएँ हिस्से में होगा।

नोट को बनाने में यह भी ध्यान दिया गया है कि कोई नेत्रहीन या दृष्टिहीन भी नोट को हाथ में पकड़ने पर उसका मूल्य बता सके। महात्मा गाँधी का पोट्रेट, पहचान का चिह्न और अशोक पिलर का चिह्न ऊपर उठे हुए होंगे। पीछे की तरफ, वह वर्ष प्रिंट होगा जिस वर्ष में यह नोट प्रिंट हुआ होगा। उस पर स्वच्छ भारत का लोगो और स्लोगन भी होगा।

भारत सरकार के सिक्कों का उत्पादन चार स्थानों (टकसालों) पर होता है-मुम्बई, कोलकाता, हैदराबाद और नोएडा।

RBI द्वारा रु 1 के नोट का पुन पुनर्प्रचलन:

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने 4 मार्च, 2015 को रु 1 का नोट पुनर्प्रचलन में लाने की घोषणा की है। इसके लिए द क्वाएनेज एक्ट, 2011 के तहत् निविदा जारी की, जिसके माध्यम से नोट की प्रिंटिंग की जाएगी। 20 वर्षो बाद पुनः रु 1 का नोट जल्दी ही प्रचलन में होगा।

नवम्बर, 1994 में अधिक लागत के कारण रु 1 के नोट की प्रिंटिंग बन्द कर दी गई थी। रु 2 तथा रु 5 के नोट की प्रिंटिंग भी वर्ष 1995 में बन्द कर दी गई। इसके बाद से इन मूल्यों के सिक्के ही प्रचलन में रह गए थे।

बैंकिंग सर्विस डिलीवरी चैनल-।

(Banking Service Delivery Channel-)

प्रौद्योगिकी के निरन्तर विकास ने बैंकिंग क्षेत्र में भी अनेक नवाचारों को प्रोत्साहन प्रदान किया है। इन प्रौद्योगिकीय नवाचारों के कारण अब बैंकिंग गतिविधियों का भी सार्वभौमीकरण हो रहा है। इसके साथ ही लेन-देन, भुगतान, धन भेजना, खाता अद्यतन करने (up to date), चेक जमा करने आदि अनेक कार्यों हेतु उपभोक्ता की बैंक कर्मचारियों पर निर्भरता समाप्त हो गई है। इससे एक ओर जहाँ बैंक की कार्यकुशलता में वृद्धि हो रही है, वहीं दूसरी ओर ग्राहकों को भी सुविधा हो रही है। पिछले कई दशकों में भारत के बैंकिंग क्षेत्र की गतिविधियों में तकनीकी रूप से तेज़ी से विकास हुआ है। बैंकिंग क्षेत्र के प्रमुख डिलीवरी चैनल निम्नलिखित हैं -

स्वचालित टेलर मशीन (ATM):

(Automated Teller Machine)

स्वचालित टेलर मशीन (Automated Teller Machine, ATM) एक ऐसा कम्प्यूटरीकृत बैंकिंग उपकरण है, जो ग्राहकों को ब्रांच प्रतिनिधि की किसी सहायता के बिना धन निकालने से सम्बन्धित मूलभूत सुविधा प्रदान करता है। एटीएम से ग्राहकों को निम्न लाभ प्राप्त होते हैं-

1. 24 × 7 और 365 दिन लेन-देन की सुविधा
2. तीव्र एवं कार्यकुशल सेवा
3. लेन-देन में गोपनीयता
4. लेन-देन में विश्वसनीयता

एटीएम से बैंक को निम्न प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं-

1. बैंक की गतिविधियों में विस्तार
2. बैंक के कार्य संचालन हेतु पर्याप्त समय की उपलब्धता
3. बैंक के कर्मचारियों पर अनावश्यक कार्यभार में कमी
4. नई बैंक शाखाएँ खोलने हेतु प्रोत्साहन
5. बैंक को धन के विशाल हस्तान्तरण से मुक्ति
6. बैंक के मानव संसाधन का अनुकूलतम उपयोग
7. वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहन ।

3. भारत में एटीएम का इतिहास

1. भारत में सबसे पहला एटीएम वर्ष 1987 में HSBC बैंक द्वारा मुम्बई में स्थापित किया गया।
2. भारत की पहली गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनी 'टाटा कम्युनिकेशन पेमेण्ट सॉल्यूशन' (इण्डीकैश) द्वारा चन्द्रपाड़ा, थाणे (महाराष्ट्र) में ATM स्थापित किया गया।
3. मोबाइल एटीएम प्रारम्भ करने वाला पहला बैंक ICICI बैंक था।

4. दृष्टिहीनों के लिए यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा पहला बोलता एटीएम अहमदाबाद (गुजरात) में प्रारम्भ किया गया था।

5. भारत का सर्वप्रथम ग्रामीण बैंक एटीएम वाराणसी में नेशनल पेमेण्ट कॉर्पोरेशन ने जारी किया।

एटीएम के विभिन्न प्रकार (Type of ATM):

(i) **ह्वाइट लेबल एटीएम** (White Label ATM) इस प्रकार के ATM का स्वामित्व और संचालन गैर-बैंकिंग संस्थाओं के अन्तर्गत आता है। किसी भी बैंक का ग्राहक सेवा शुल्क का भुगतान करके ह्वाइट लेबल एटीएम से धन निकाल सकता है। ह्वाइट लेबल एटीएम पर किसी भी बैंक का लोगो (logo) नहीं होता है। भारत के प्रथम ह्वाइट लेबल एटीएम की स्थापना टाटा कम्पनी ने मुम्बई के निकट चन्द्रपाड़ा नामक स्थान पर की है।

(ii) **ब्राउन लेबल एटीम** (Brown Label ATM) इस प्रकार के ATM का हार्डवेयर और पट्टा (lease) सेवा प्रदाता के स्वामित्व में होता है, लेकिन धन का प्रबन्ध तथा बैंकिंग नेटवर्क के साथ कनेक्टिविटी उस प्रायोजक बैंक द्वारा प्रदान की जाती है, जिसका ब्रांड एटीएम पर प्रयोग किया जाता है। ब्राउन लेबल एटीएम बैंक के स्वामित्व वाले एटीएम और ह्वाइट लेबल एटीएम के बीच का एक विकल्प होता है।

(iii) **ऑनलाइन एटीएम** (Online ATM) इस प्रकार के ATM हर समय बैंक के डेटाबेस के साथ जुड़े होते हैं तथा ऑनलाइन लेन-देन की सुविधा उपलब्ध कराते हैं, इसके अन्तर्गत भुगतान राशि की सीमा तथा खाते में शेष राशि को बैंक द्वारा निगरानी में रखा जाता है।

(iv) **ऑफ़लाइन** (Offline ATM) इस प्रकार के एटीएम बैंक के डेटाबेस से जुड़े हुए नहीं होते हैं, इनके अन्तर्गत निकासी की राशि पूर्व निश्चित होती है तथा उपयोगकर्ता अपने खाते में उपलब्ध राशि के आधार पर ही धनराशि निकाल सकता है।

(v) **स्टैंड एलोन एटीम** (Stand Alone ATM) इस प्रकार के एटीएम किसी भी एटीएम नेटवर्क से जुड़े हुए नहीं होते हैं। अत: उनके लेन-देन, ATM शाखा और लिंक शाखाओं से प्रतिबन्धित होते हैं।

(vi) **ऑन-साइट एटीएम** (On Site ATM) इस प्रकार के एटीएम की स्थापना बैंक शाखा के प्रांगण में ही की जाती है, जिससे ग्राहकों द्वारा बैंक शाखा और एटीएम दोनों का प्रयोग किया जा सके।

(vi) **ऑफ-साइट एटीएम** (Off Site ATM) इस प्रकार के एटीएम की स्थापना स्टैण्ड अलोन आधार पर की जाती है। इन एटीएम के आस-पास बैंक शाखा नहीं होती है। इन एटीएम की स्थापना उन भौगोलिक क्षेत्रों तक पहुँच बनाने के लिए की जाती है, जहाँ बैंक की कोई शाखा नहीं है।

कुछ अन्य प्रकार के एटीएम:

(Other Types of ATMs)

वर्कसाइट एटीएम (Worksite ATM) - किसी विशेष संस्था के प्रांगण में उसी संस्था के कर्मचारियों के लिए समर्पित एटीएम।

मोबाइल एटीएम (Mobile ATM) - वाहनों में लगे विभिन्न स्थानों पर घूमने वाले एटीएम।

ग्रीन लेबल एटीएम (Green Label ATM) - कृषि सम्बन्धित लेन-देन सम्पन्न करने हेतु।

ऑरेंज लेबल (Orange Label ATM) -शेयरों लेन-देन सम्पन्न करने वाले एटीएम।

येलो लेबल एटीएम (Yellow Label ATM) - ई-कॉमर्स उपलब्ध कराने वाले एटीएम।

पिंक लेबल एटीएम (Pink Label ATM) महिला बैंकिंग को समर्पित ATM।

एटीएम द्वारा नई बैंकिंग सेवाएँ:

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने 14 जनवरी, 2016 को मशीनों की सहायता से बैंकिंग प्रक्रिया तथा बैंक परिचालन की सुविधा के विस्तार को स्वीकृति प्रदान की। इसके द्वारा एटीएम पर ही बैंक शाखाओं की भाँति ग्राहकों को सभी

बैंकिंग सुविधाएँ प्राप्त हो सकेंगी। RBI के इस निर्णय के बाद अब एटीएम ही अपने आप में सम्पूर्ण बैंक की भूमिका के रूप में होंगे। इसके साथ ऋण के लिए आवेदन करने, ड्राफ्ट बनवाने तथा बिलों के भुगतान करने जैसी सुविधाएँ भी एटीएम से प्राप्त की जा सकेंगी। भारतीय स्टेट बैंक का लगभग 48,000 मशीनों का सबसे बड़ा एटीएम नेटवर्क है, वहीं ICICI बैंक (18,000), AXIS बैंक (12500) तथा HDFC बैंक (12,000) का भी एटीएम नेटवर्क बड़ा है।

बैंक मित्र (Bank Mitra):

बैंक मित्र वे लोग होते हैं, जो प्रधानमंत्री जन-धन योजना के अन्तर्गत लोगों को बैंकिंग सुविधाएँ (खाता खोलना, खाते में पैसा जमा करना) उपलब्ध करवाते हैं। विशेषकर बैंक मित्र उन जगहों पर कार्य करते हैं, जहाँ किसी बैंक की शाखा (branch) एवं ए.टी.एम मशीन नहीं होते हैं। ये एक प्रकार बैंक के अभिकर्ता (agent) होते हैं। बैंक मित्रों द्वारा निम्न कार्य किया जाता है।

1. बचत (saving) एवं लोन से सम्बन्धित जानकारी लोगों को देना।
2. प्रधानमंत्री जन-धन योजना के अन्तर्गत बचत एवं दूसरी सुविधाओं के बारे में लोगों को जागरूक एवं शिक्षित करना।
3. ग्राहको की पहचान करना।
4. प्राथमिक जानकारी, आँकड़ों को एकत्र करना, फॉर्म को सम्भालकर रखना, लोगों द्वारा दी गई जानकारी की जाँच करना तथा लोगों द्वारा दी गई राशि को जमा करना।
5. खाते (account) से सम्बन्धित जानकारी ग्राहक को उपलब्ध करवाना।

प्वॉइण्ट ऑफ सेल (POS):

इसे खरीदने की जगह (point of purchase) भी कहा जाता है। POS वह स्थान एवं समय होता है, जहाँ खुदरा लेन-देन (transaction) किया जाता है। पीओएस के समय व्यापारी ग्राहक पर देय राशि का मूल्यांकन करके इंगित करता हैं तथा ग्राहक के लिए एक विवरण पत्र तैयार कर सकता है (जो नकद रजिस्टर या प्रिण्ट आउट हो सकता है) तथा वह ग्राहक को भुगतान करने का विकल्प दे सकता है। पीओएस एक ऐसा माध्यम है, जहाँ ग्राहक व्यापारी को किसी सामान (goods) या सेवा (services) के बदले में भुगतान करता है। भुगतान (payment) प्राप्ति के पश्चात् व्यापारी उस लेन-देन की एक रसीद (receipt) जारी कर सकता है, जो अधिकांशत: छपी हुई (printed) होती है, लेकिन अधिकतर रसीद इलेक्ट्रॉनिक रूप में भेजी जाती है।

1. बीमा (Insurance)

एक ऐसी व्यवस्था जिसमें कोई बीमा कम्पनी (insurance company) आपके (ग्राहक) किसी भी प्रकार का नुकसान, दुर्घटना, बीमारी, मृत्यु इत्यादि के सन्दर्भ में मुआवजा देने की गारन्टी देता है। बीमा प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक होता है क्योंकि यह-

(a) किसी व्यक्ति के आकस्मिक निधन के पश्चात् यह (बीमा) उसके परिवार के सदस्य को वित्तीय सुरक्षा देती है, जो उस परिवार के लिए सहारा होता है।

(b) चिकित्सा सुरक्षा (Medical Saftey) के रूप में यदि किसी व्यक्ति की आपात चिकित्सा (Medical Emergency) की स्थिति उत्पन्न हो जाए, तो उस स्थिति में बीमा कम्पनी धन (money) उपलब्ध करवाती है।

बीमा के प्रकार:

(Types of insurance)

बीमा दो प्रकार के होते है :-

(a) जीवन बीमा (Life Insurance)

(b) गैर-जीवन बीमा (Non-life Insurance)

(a) जीवन बीमा, (Life Insurance):

जीवन बीमा, बीमा धारक एवं सम्बन्धित कम्पनी के बीच एक अनुबन्ध होता है। जीवन बीमा के अन्तर्गत बीमाधारक प्रीमियम (Premium) का भुगतान करता है, ताकि इसके बदले में कम्पनी किसी भी दुर्घटना की स्थिति में ग्राहक को धन मुहैया कराती हैं। जीवन बीमा का लक्ष्य व्यक्ति को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करवाना होता है। जीवन बीमा कई प्रकार के जोखिम को पूरा करती है। यथा - असामयिक मृत्यु, बीमारी इत्यादि।

(b) गैर-जीवन बीमा (Non-Life Insurance):

इसे सामान्य जीवन बीमा भी कहा जाता है। यह बीमा की एक ऐसी पद्धति है, जिसके अन्तर्गत किसी वस्तु की हानि (losses) एवं क्षति (damage) की स्थिति में बीमा कम्पनी द्वारा क्षतिपूर्ति राशि दी जाती है। यह व्यापक स्तर पर बीमा क्षेत्र को सुरक्षा देता है। यह (सामान्य बीमा) सामान्यतः एक वर्ष के लिए कवरेज सुरक्षा देती है तथा इसके बदले में एक मुक्त राशि एक ही बार में लेती है। यह मुख्यतः सम्पत्ति नुकसान (property loss) (गाडी का चोरी होना या घर का जलना), दुर्घटना से उत्पन्न मृत्यु या चोर (injury), फसल नुकसान, वाहनों का बीमा इत्यादि।

विभिन्न योजनाएँ (Various Schemes)

2. प्रधानमंत्रीजन-धनयोजना] PMJDY]

(Pradhan Mantri Jan-Dhan Yojana (PMJDY)

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 28 अगस्त, 2014 को प्रधानमंत्री जन धन योजना (Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana, PMJDY) को वित्तीय समावेशन के लिए एक राष्ट्रीय मिशन के रूप में शुरू किया। इस मिशन का उद्देश्य वहन करने योग्य तरीके से बैंकिंग/बचत और जमा खाते, भेजी हुई रकम, कर्ज, बीमा, पेंशन जैसी वित्तीय सेवाओं तक पहुँच सुनिश्चित करना है। इस योजना का उद्देश्य प्रत्येक परिवार के लिए कम-से-कम एक बैंक खाता सुनिश्चित करना है। यह कार्यक्रम वित्त मंत्रालय द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है।

PMJDY योजना के लाभ निम्न प्रकार है-

जमा पर ब्याज

रु 1 लाख तक का दुर्घटना बीमा कवर

न्यूनतम बैलेंस की आवश्यकता नहीं

रु 1 लाख तक का दुर्घटना बीमा कवर व भारत में कहीं भी आसानी से धन का हस्तान्तरण

सरकारी योजना के लाभान्वितों को इन खातों से सीधे हस्तान्तरण का लाभ मिलेगा

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (PMSBY):

(Pradhan mantri Suraksha Bima Yojana (PMSBY)

जीवन सुरक्षा से जुड़ी इस योजना की 'दुर्घटना बीमा योजना' के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें व्यक्ति को 'प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना' रु 12 के वार्षिक प्रीमियम पर प्रदान की जाएगी। इस योजना में दुर्घटना के कारण मृत्यु अथवा स्थायी विकलांगता की स्थिति में भी बीमा कवर प्रदान किया जाएगा। अस्थायी अपंगता की स्थिति में रु 1 लाख का बीमा कवर प्रदान किया जाएगा। यह योजना न्यूनतम 18 वर्ष तथा अधिकतम 70 वर्ष की आयु तक के लिए व्यक्ति के लिए उपलब्ध है।

इस योजना में शुरूआती अनुभव के आधार पर प्रीमियम राशि में बढ़ोतरी का प्रावधान है, किन्तु पहले तीन वर्षों में यह बढ़ोतरी नहीं होगी।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा (PMJJBY):

(Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojana (PMJJBY)

इस योजना का उद्देश्य लोगों को सस्ती दर पर जीवन बीमा का लाभ देना है, जो कम-से-कम प्रीमियम में लोगों को पारिवारिक सुरक्षा लाभ देने में सक्षम हो। इस योजना के तहत सभी बचत बैंक खाताधारक, जिनकी आयु न्यूनतम 18 वर्ष तथा अधिकतम 50 वर्ष होगी, लाभ अर्जित कर सकते हैं।

योजना की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं-

इस योजना के अन्तर्गत बचत खाताधारकों को वार्षिक रु 330 प्रीमियम का जीवन बीमा प्रदान किया जाना है। बीमा कराने वाले व्यक्ति की मृत्यु की स्थिति में रु 2 लाख का जीवन बीमा कवर प्रदान किया जाएगा।

इस बीमा के पात्र व्यक्ति को खाते में स्वतः डेबिट सुविधा द्वारा प्रीमियम जमा कर दिया जाएगा।

सरकार ने भारतीय जीवन बीमा निगम (एल आई सी) के साथ अन्य निजी बीमा कम्पनियों को इससे जुड़ने को कहा है। यह योजना 1 जून, 2015 को आरम्भ हुई और 31 मई, 2016 तक चलेगी, जिसके बाद वार्षिक आधार पर यह पुन: जारी रहेगी।

3. अटल पेंशन योजना)Atal Pension Yojna)

इस पेंशन योजना का उद्देश्य असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों, जिनकी न्यूनतम आयु 18 वर्ष तथा अधिकतम आयु 40 वर्ष हो, को सरकार की पेंशन लाभ गारण्टी प्रदान करना है। इस योजना से जुड़ने वाले व्यक्ति को 60 वर्ष की आयु के बाद कम-से-कम रु 1000 तथा अधिकतम रु 5000 तक की पेंशन राशि प्रत्येक महीने दी जा सकेगी।

इस योजना के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा पात्र अंशदाता के बैंक खाते में कुल अंशदान का आधा हिस्सा अथवा र 1000 (जो कम हो) प्रत्येक महीने जमा किए जाएँगे। सरकार द्वारा पाँच वर्षों तक की राशि जमा की जाएगी।

सरकार का अंशदान उन्हीं व्यक्तियों के लिए होगा, जो 31 दिसम्बर, 2015 तक इस योजना से जुड़ेंगे। कोई भी व्यक्ति, जो अन्य सामाजिक सुरक्षा योजना से जुड़ा है अथवा आयकर दाता है, इस योजना का लाभार्थी नहीं बन सकता है।

अटल पेंशन योजना के अन्तर्गत किसी भी व्यक्ति को 20 वर्ष से अधिक धनराशि जमा नहीं करनी होगी। 'अटल पेंशन योजना' स्वावलम्बम योजना के अन्तर्गत 'पेंशन कोष नियामक तथा विकास प्राधिकरण' द्वारा संचालित राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली के माध्यम से ग्राहक इस योजना में नामांकन करा सकेगें।

माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेण्ट रिफाइनेंस एजेंसी बैंक:

माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेण्ट रिफाइनेंस एजेंसी (Micro Units Development Refinance Agency, MUDRA) बैंक की घोषणा वर्ष 2015 के बजट में की गई है, जिसके रु 20,000 करोड़ का कोष निर्धारित किया गया है और इसमें रु 3,000 करोड़ की ऋण गारण्टी राशि की घोषणा की गई है। मुद्रा बैंक प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के जरिए सूक्ष्म वित्त संस्थानों का पुनर्वितीयन करेगा तथा कर्ज देते समय अनुसूचित जाति/जनजाति के उद्यमियों को प्राथमिकता दी जाएगी।

इन उपायों से युवाओं, शिक्षित अथवा कौशल प्राप्त श्रमिकों का आत्मविश्वास बढ़ेगा, जो पहली पीढ़ी के उद्यमी बनने की आकांक्षा गतिविधियों का विस्तार कर सकेंगे।

मुद्रा बैंक की आवश्यकता:

मुद्रा बैंक से देश के करीब 5 करोड़ 77 लाख छोटे कारोबारियों को फायदा मिलेगा। छोटी मैन्युफैक्चरिग यूनिट और दुकानदारों को इसमें लोन मिलेगा। इसके साथ ही सब्जी वालों, सैलून, खोमचे वालों को भी इस योजना के तहत लोन मिल सकेगा। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना में हर सेक्टर के हिसाब से स्कीम बनाई जाएगी।

मुद्रा बैंक की विशेषताएँ:

मुद्रा बैंक की विशेषताएँ निम्न हैं-

इस योजना के तहत छोटे उद्यमियों को कम ब्याज दर पर रु 50 हजार से रु 10 लाख तक का कर्ज दिया जाएगा। केन्द्र सरकार इस योजना पर रु 20 हजार करोड़ लगाएगी, साथ ही इसके लिए रु 3,000 करोड़ रुपये की क्रेडिट गारण्टी रखी गई है।

मुद्रा बैंक छोटे फाइनेंस संस्थानों (माइक्रो फाइनेंस इंस्टीट्यूशन) को रिफाइनेंस करेगा, ताकि वे प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत छोटे उद्यमियों को कर्ज दे सके।

मुद्रा बैंक के तहत अनुसूचित जाति/जनजाति के उद्यमियों को प्राथमिकता पर कर्ज दिया जाएगा।

इसकी पहुँच का दायरा बढ़ाने के लिए डाक विभाग के विशाल नेटवर्क का इस्तेमाल किया जाएगा।

मुद्रा बैंक देशभर की 5.77 करोड़ छोटी व्यापार इकाइयों की मदद करेगा। इन्हें अभी बैंक से कर्ज लेने में मुद्रा का वर्गीकरण करने में बहुत मुश्किल होती है।

मुद्रा का वर्गीकरण:

मुद्रा का वर्गीकरण निम्न प्रकार है-

इस व्यवस्था के तहत तीन तरह के कर्ज दिए जाएँगे-शिशु, किशोर, तरुण

रु 50,000 तक के ऋण शिशु हेतु

रु 50,000 से अधिक तथा 5 लाख तक के ऋण किशोर हेतु

रु 5 लाख से रु 10 लाख तक के ऋण तरुण हेतु

राष्ट्रीय पेंशन योजना (NPS):

राष्ट्रीय पेशन प्रणाली (National Pension System (NPS)) भारत सरकार द्वारा शुरू की गयी एक पेंशन-योजना है। यह 1 जनवरी 2004 से आरम्भ हुई थी। आरम्भ में एनपीएस सरकार में भर्ती होने वाले नए व्यक्तियों (सशस्त्र सेना बलों के अलावा) के लिए आरम्भ की गई थी। 1 मई 2009 में यह स्वैच्छिक आधार पर असंगठित क्षेत्र के कामगारों सहित देश के सभी नागरिकों को प्रदान की जा रही है। इस योजना के सहारे सरकार ने स्वयं को पेंशन की जिम्मेदारी से मुक्त करने की कोशिश की है। सरकार की भूमिका केवल शुरूआती दौर में बराबर के अंशदाता के रूप में है। कर्मचारी और सरकार के अंशदान से संचित राशि निश्चित वित्तीय संस्थानों को मिलती है, जिसका वे दिए गए निर्देशों के तहत प्रबन्धन करते हैं।

भारत सरकार ने पेंशन क्षेत्र के विकास और विनियमन के लिए 10 अक्टूबर 2003 को पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) स्थापित किया। राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) 1 जनवरी 2004 को सभी नागरिको को सेवानिवृत्ति आय प्रदान करने के उद्देश्य से आरम्भ की गई थी। एनपीएस का लक्ष्य पेंशन के सुधारों को स्थापित करना और नागरिकों में सेवानिवृत्ति के लिए बचत की प्रवृति को बढ़ावा देना है।

इसके अलावा, केन्द्र सरकार ने सेवानिवृति के लिए असंगठित क्षेत्र को स्वैच्छिक बचत का बढ़ावा देने के लिए केन्द्रीय बजट 2010-11 में एक सह अंशदान पेंशन योजना 'स्वावलम्बन योजना' आरम्भ की। स्वावलंबन योजना के तहत सरकार प्रत्येक एनपीएस अंश दाता को 1000 रुपये की राशि प्रदान करेगी, जो न्यूनतम 1000 रुपए और अधिकतम 12000 रुपए का अंश दान प्रति वर्ष करता है। यह योजना वर्तमान में वित्तीय वर्ष 2016-17 तक लागू हैं।

लोक भविष्य निधि [PPF] योजना:

PPF एक बचत सह कर-बचत उपकरण है, जो उचित प्रतिफल और आय का लाभ प्रदान करने वाले निवेश का प्रस्ताव देकर छोटी-छोटी बचतों को एकत्रित करती है। यह केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थापित की गई है।

कोई भी व्यक्ति, जो भारत का निवासी है, वह लोक भविष्य निधि के अन्तर्गत खाता खोलने के योग्य है। ऐसे व्यक्ति को खाता खोलने के लिए तथा खाता जारी रखने के लिए रु 500 न्यूनतम जमा करना अनिवार्य है। इसमें अधिकतम जमा की सीमा रु 1,50,000 है। इस खाते में जमा राशि पर एक निश्चित दर से ब्याज प्राप्त होता है, जो

सामान्यत: अन्य जमाओं पर प्राप्त ब्याज से अधिक होता है। इसकी आरम्भिक अवधि 15 वर्ष है, जिसे 5 वर्ष और बढ़ाया जा सकता है।

पेंशन (Pension):

यह एक ऐसी योजना है, जिसमें थोड़ी-थोड़ी निधि अलग कर दी जाती है, जिसे सेवानिवृति के पश्चात् प्रयोग किया जाता है।

PPF की परिपक्वता पर एक व्यक्ति-

या तो कुल धनराशि निकाल सकता है।

या तो PPF खाते को बिना किसी योगदान (धनराशि न अदा करना) के 15 वर्ष के लिए आगे बढ़ा सकता है।

या PPF खाते को योगदान के साथ आगे बढ़ाए, जिसमें व्यक्ति PPF खाते में आगे भी धनराशि जमा कर सकता है।

4. मोबाइल पर बैंक) Bank on your Mobile]

अपने मोबाइल पर बैंक का अर्थ होता है, आप अपने बैंक का कहीं भी, किसी भी समय उपयोग कर सकते हैं। इसके लिए पहले अपने खाते को देखना (See your Account) होता है। फिर आप किसी को भी फण्ड ट्रांसफर (Fund Transfer) बिलों का भुगतान (pay bills) (बिजली, पानी) लेन-देन की प्रक्रिया इत्यादि कार्यों को आसानी से कर सकते हैं।

मोबाइल बैंकिंग (Mobile Banking):

बैंक ग्राहकों को मोबाइल बैंकिंग सेवा के लिए कई सारे विकल्प दे रहे हैं। आप अपने बैंक खाते को मोबाइल नम्बर से जोड़ सकते हैं। बैंक मनी आईडेंटिफाई नम्बर और मोबाइल पिन (एम-पिन) देगा। एम-पिन पासवर्ड की तरह इस्तेमाल होगा। इसके जरिए आप अपनी पूँजी को दूसरे खाते में ट्रांसफर कर सकते हैं। जैसे कि अभी दूसरे खातों में राशि का ट्रांसफर नेट बैंकिंग या बैंक शाखा में जाकर करते हैं। इसके अलावा, बैंक अपने मोबाइल एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर भी देते हैं, जिसे आप बैंक को एसएमएस या बैंक जाकर अपने स्मार्टफोन पर डाउनलोड कर सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक का एप्लीकेशन एसबीआई फ्रीडम और आईसीआईसीआई बैंक का आई-मोबाइल नाम से है।

मोबाइल वॉलेट (Mobile Wallet):

जिस तरह से बैंक हमारे पैसे को डेबिट कार्ड के जरिए खर्च करने की सुविधा देता है, ठीक वैसे ही कुछ पेमेंट सर्विसेज मोबाइल ऐप या कम्प्यूटर के जरिए पेमेन्ट की सुविधा देते हैं। यह सुविधा E-wallet के जरिए दी जाती है। ई-वॉलेट में एक निश्चित रकम रखी जा सकती है, जिसके जरिए जरूरत पड़ने पर पेमेंट किया जा सकता है।

इ वॉलेट के फायदे (Benefit of E-Wallet)-

कार्ड स्वाइप करने की समस्या से मुक्ति

पेमेन्ट करते वक्त आपकों कार्ड डिटेल्स पूर्ण जानकारी भरने की जरूरत नहीं पड़ती। सबकुछ एक क्लिक में ही हो जाता है।

किसी ऑनलाइन साइट या लिमिटेड सेल ऑफर रेल या फ्लाइट टिकट बुक करते समय तेजी से पेमेन्ट करने की जरूरत होती है।

आप अपने E-wallet से किसी को भी पैसा बिना किसी बैंकिंग के मिनटों में भेज सकते है।

इस पेमेन्ट सिस्टम में किसी भी तरह के कार्ड डिटेल्स नहीं देने होते हैं। ऐसे में जानकारी लिंक या हैकिंग की संभावना कम रहती है। अगर ऐसा हो भी जाता है तो वालेट में रखे एक सिमित अमाउन्ट पर ही चपत लगेगी और वॉलेट में रखे पैसो की जिम्मेदारी और किसी भी तरह की प्रोब्लम होने पर वॉलेट कम्पनी जिम्मेदार होती है।

वॉलेट में ऑफलाइन पेमेंट के ऑप्शन की वजह से दुकानों में खुले पैसे देने की जरूरत नहीं पड़ती है।

मोबाइल वॉलेट कैसे काम करता है?

(How to work mobile wallet works)

मोबाइल वॉलेट को उपयोग करने के लिए एक मोबाइल वॉलेट ऐप (App, application) को डाउनलोड करना होगा, उसके बाद उस app को खोलने के पश्चात् उसमें एक अपना पिन (PIN) डालना होगा उसके बाद उस सूचना की प्राप्त करने हेतु सहमति स्वीकृत करना होता है। ऐप (app) सूचनाओं को संचय in NFC (Near-Field Communications) तकनीक, जिसके माध्यम से सुगम तरीके से भुगतान कर दिया जाता है।

हम सीखेंगे-

- इलेक्ट्रानिक भुगतान वालेट सिस्टम की मदद से अपने आवासीय क्षेत्रों में उत्पादों और सेवाओं के लिए भुगतान करता। भारत सरकार ने स्मार्टफोन ऐप के माध्यम से कई इलेक्ट्रानिक वालेट सिस्टम लान्च किए हैं जैसे भारत इंटरफेस फार मनी (BHIM) आधार पे, और बहुत सारे!
- ई-वालेट का उपयोग करना जो कि मोबाइल फोन जैसे इलेक्ट्रानिक साधनों की मदद से उपयोग किया जा सकता है। ये वालेट फिजिकल वालेट की जगह लेते हैं। एक उपयेागकर्ता ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यमों से भी कैशलेस भुगतान कर सकता है।
- मोबाइल रिचार्ज, यूटिलिटी बिल भुगतान, किराना स्टोर, ई-कामर्स पोर्टल्स आदि के लिए ई-वालेट का उपयोग करना।

- **Digital Financial Tools (डिजिटल वित्तीय टूल्स)**

- **Understanding OTP and QR Code (ओटीपी और क्यू आर कोड को समझना)**

- OTP (वन टाइम पासवर्ड) फीचर, मानक उपयोगकर्ता के नाम (user name) और पासवर्ड के लिए लाकगन सुरक्षा की एक दूसरी परत जोड़ती है। OTP एक अनियमित ढंग से उत्पन्न है। यह सुविधा एक दो-कारक प्रमाणीकरण (two-factor authentication) योजना है जो उपयोगकर्ताओं को अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान के लिए और पासर्वड क्रेडेंशियल्स के अलावा वन-टाइम पासर्वड का उपयोग करती है।

- OTP सुविधा से लिए उपयोगकर्ताओं को पहले सही लागिन क्रेडेंशियल सबमिट करना होता है लागिन प्रक्रिया पूरी होने के बाद, सर्वर OTP पासर्वड क्रिएट करता है, जो उपयोगकर्ता को पूर्व-निर्धारित ईमेल पते या रजिस्टर्ड मोबाइल नम्बर पर भेजा जाता है। उपयोगकर्ता द्वारा इस वन-टाइम पासवर्ड को उसकी समाप्त होने की अवधि से पहले यूज़ कर लेना चाहिए । OTP के समाप्त होने की अधिकतम अवधि2 मिनट होती है।

- **QR Code (Quick Response Code):**

- क्यूआर कोड एक प्रकार का बारकोड होता है जिसमें डाट्स का एक मैट्रिक्स होता है। इसे एक क्यूआर स्कैनर या एक अंतर्निहित कैमरे के साथ स्मार्टफोन का उपयोग करके स्कैन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए अपने फोन पर एक QR कोड को स्कैन करने से आपके फोन के वेब ब्राउजर में एक URL ओपन हो सकता है। एक स्मार्टफोन का उपयोग क्यूआर कोड स्कैनर के रूप में किया जाता है जो उपयोगी जानकारी के साथ कोड प्रदर्शित करता है।

- QR कोड में अक्सर एक लोकेटर, पहचानकर्ता या ट्रैकर के लिए डेटा होता है जो किसी वेबसाइट या एप्लिकेशन को इंगित करता है। क्यूआर कोड विज्ञापन रणनीति का फोकस बन गया है क्योंकि यह एक यूआरएल को मैन्युअल रूप से दर्ज करके ब्रांड की वेबसाइट तक पहुँचने का एक तरीका प्रदान करता है।

क्यूआर कोड का उपयोग विभिन्न अनुप्रयोगों में निम्नानुसार किया जाता है-

- क्यूआर कोड का उपयोग विभिन्न मोबाइल डिवाइस ऑपरेटिंग सिस्टम पर किया जा सकता है। iPhones (iOS 11से अधिक) और कुछ Android डिवाइस बाहरी ऐप डाउनलोड किए बिना ही QR कोड्स को स्कैन कर सकते हैं। कैमरा ऐप उस तरह के क्यूआर कोड को स्कैन और प्रदर्शित करने में सक्षम है।
- QRकोड का उपयोग बैंक खाते की जानकारी या क्रेडिट कार्ड की जानकरी को संग्रहित करने के लिए किया जा सकता है, या उन्हें विशेष रूप से विशेष भुगतान प्रदाता अनुपयोगों के साथ काम करने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है। दुनिया भर में QR कोड भुगतान के कई परीक्षण अनुप्रयोग हैं।
- क्यूआर कोड का उपयोग वेबसाइटों में लाग इन करने के लिए किया जा सकता है।
- एक एंड्राइड ऐप है, जो डेटा एन्क्रिप्शन स्टैंडर्ड एल्गोरिथम का उपयोग करके क्यूआर कोड के एन्क्रिप्शन और डिक्रिप्शन का प्रबन्ध करता हैं

- QR कोड्स का उपयोग विभिन्न रिटेल आउटलेट्स द्वारा किया गया है जिनके पास लायल्टी प्रोग्राम्स होते हैं।

UPI (Unified Payment Interface) (यूनिफाइड पेमेन्ट इंटरफेस)

यूनिफाइड पेमेन्ट इंटरफेस (यूपीआई) एक ऐसी प्रणाली है जो कई बैंक खातों को एक ही मोबाइल एप्लिकेशन में (किसी भी भाग लेने वाले बैंक की) शक्ति प्रदान करती है, कई बैंकिंग सुविधाओं, सीमलेस फंड राउटिंग और मर्चेंट भुगतानों को एक ही मंच में विलय करती है। यह "पीयर टू पीयर" संग्रह अनुरोध को पूरा करता है जिसे आवश्यकता और सुविधा के अनुसार शेड्यूल और भूगतान किया जा सकता है। प्रत्येक बैंक एंड्रा◌ॅइड, विंडोज और आईओएस मोबाइल प्लेटफा◌ॅर्म के लिए अपना खुद का यूपीआई ऐप प्रदान करता है।

Understanding Unified Payment Interface (यूनिफाइड पेमेन्ट इंटरफेस को समझाना)

युनिफाइड पेमेंट इंटरफेस एक रियल-टाइम पेमेंट सिस्टम है। यह two-click Factor authentication process के माध्यम से आतंरिक तौर पर एक बैंक से दूसरे बैंक में हस्तांतरणको सक्षम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह इंटरफेस भारत की केंद्रीय बैंक "भारतीय रिजर्व बैंक (RBI)" द्वारा नियांत्रित किया जाता है। यह एक मोबाइल प्लेटफार्म के माध्यम से दो बैंक खातों के बीच पैसे ट्रांसफर करने का काम करता है।

इस प्रणाली को दो पक्षों के बीच धन हस्तांतरित करने का एक सुरक्षित तरीका कहा जाता है और भौतिक नकदी या बैंक के माध्यम से लेनदेन करने की आवश्यकता को समाप्त करता है।

How the Unified Payments Interface Works (यूनिफाइड पेमेंट इंटैरफेस कैसे काम करता है?)

- **Sending money on the UPI:** UPI पर पैसे भेजने को "पुश" कहा जाता है। पैसे भेजने के लिए, उपयोगकर्ता इंटरफेस में लाग इन करता है और सेंड मनी / भुगतान विकल्प का चयन करता है। प्राप्तकर्ता की वर्चुअल आईडी और वांछित राशि दर्ज करने के बाद वह उस खाते को चुनता है जिससे धनराशि डेबिट की जाएगी। उपयोगकर्ता फिर एक विशेष व्यक्तिगत पहचान संख्या (पिन) दर्ज करता है और एक कन्फर्मेशन प्राप्त करता है।
- **Receiving money:** सिस्टम के माध्यम से पैसा प्राप्त करना "पुल" कहलाता है। एक बार जब उपयोगकर्ता सिस्टम में लाग इन हो जाता है,तो वह धन प्राप्त करने के विकल्प का चयन करता हैं फिर, उपयोगकर्ता को प्रेषक के लिए प्राप्त की जाने वाली राशि वह खाता जिसमें वह धन जमा करेगा, और वर्चुअल आईडी दर्ज करनी होगी। एक संदेश भुगतानकर्ता को भुगतान करने के अनुरोध के साथ जाता है। यदि वह भुगतान करने का निर्णय लेता है,तो वह लेनदेन को अधिकृत करने के लिए अपने UPI पिन को दर्ज़ करता है। एक बार स्थानांतरण पूरा हो जाने के बाद, प्रेषक और प्राप्कर्ता दोनों को अपने स्मार्टफोन पर टेस्ट संदेश द्वारा एक कन्फर्मेशन प्राप्त होता है।

Aditya Institute of Information Technology- AIIT

AePS (Aadhaar Enabled Payment System) (आधार सक्षम भुगतान प्रणाली)

आधार उनेबल्ड पेमेंट सिस्टम (AePS) नेशनल पेमेंट्स कार्पोरेशन ऑफ इंडिया (NPCI) द्वारा विकसित एक प्रणाली है जो लोगों को केवल उनके आधार नंबर की पुष्टि करके और उनके फिंगर प्रिंट की मदद से या आईरिस स्कैन द्वारा सत्यापन करके माइक्रो-एटीएम पर वित्तीय लेनदेन करने की अनुमति देता है।

लोगों को इन लेनदेन को करने के लिए अपने बैंक खाते के विवरण का उल्लेख नहीं करना पड़ता है। इस भुगतान प्रणाली की सहायता से, लोग अपने आधार संख्या के माधयम से एक बैंक खाते से दुसरे बैंक में धन भेज सकते हैं। उदाहरण के लिए, सिस्टम एक केंद्रीकृत सर्वर पर काम करता है। लोग अपने खाते से उस बैंक के किसी भी खाते में पैसा भेज सकते हैं, जिसमें प्राप्तकर्ता का खता संचालित हो।

नीचे दिए गए अनुसार AePS के कई लाभ हैं-

- बैंकिंग या गैर बैंकिंग लेनदेन, बैंकिंग संवाददाता के माध्यम से किया जा सकता है।
- एक बैंक के बैंकिंग संवाददाता अन्य बैंकों के लेनदेन भी कर सकते हैं।
- लेगों को AePS के माध्यम से लेनदेन करने के लिए अपने डेबिट/क्रेडिट कार्ड को प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है।
- लेन-देन प्रमाणीकरण के लिए फिंगरप्रिंट की आवश्यकता होती है जो इसे सुरक्षित बनाता है।
- दूर-दराज के गाँवों में लोगों को तुरन्त लेनदेन करने के लिए माइक्रो PoS मशीनों को दूर के स्थानों पर ले जाया जा सकता है।

Facilities can be availed through AePS (AePS के माध्य म से सुविधाओं का लाभ)

AePS के माध्यम से लोग कुल 6 सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। ये है-

- **Cash Withdrawal (नकद निकासी)**
- **Cash Deposit (नकद जमा)**
- **Balance Enquiry (बैलेंस पूछताछ)**
- **Aadhaar to Aadhaar Fund Transfer (आधार से आधार फंड ट्रांसफर)**
- **Mini Statement (मिनी स्टेटमेंट)**
- **EKYC-Best Finger Detection/IRIS Detection (eKYC-बेस्ट फिंगर डिटेक्शन / आईआरआईएस डिटेक्शन)**

Aditya Institute of Information Technology- AIIT

How to Use AePS? (AePS का उपयोग कैसे करें ?)

AePS का उपयोग करने की प्रक्रिया काफी आसान है। आपको इन सरल चरणों का पालन करना होगा-

- अपने क्षेत्र में बैंकिंग संवाददाता से सम्पर्क करें। (इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अगर वह उस बैंक का कार्यकारी है जिसमें आपका खाता नहीं है, तब भी आप AePS के माध्यम से लेनदेन कर सकते हैं)।
- PoS मशीन में अपना 12 अंको का आधार नंबर दर्ज करें।
- लेनदेन का प्रकार जैसे-नकद जमा, निकासी, मिनी स्टेटमेंड, फंड ट्रांसफर, बैलेंस पूछताछ या ई केवाईसी का चयन करें।
- बैंक का नाम चुनें।
- लेन-देन के लिए राशि दर्ज करें।

- अपने बायोमेट्रिक का उपयोग करके लेन-देन को प्रमणित करें।
- लेन-देन कुछ सेकंड्स में पूरा हो जाता है।
- बैंकिंग संवाददाता द्वारा आपको एक रसीद दी जाएगी।

USSD (Unstructured Supplementary Service Data)
यू एस एस डी (अनस्ट्रक्चर्ड सप्लीमेन्ट्री सर्विस डाटा)

अनस्ट्रक्चर्ड सप्लीमेंट्री सर्विस डेटा (यूएसएसडी) उपयोगकर्ताओं को *99# कोड के माध्यम से मोबाइल बैंकिंग का उपयोग करने के लिए स्मार्टफोन या डेटा/इंटरनेट कनेक्शन के बिना अनुमति देता है USSD-आधारित मोबाइल बैंकिंग का इस्तेमाल फंड ट्रांसफर, अकाउंट बैलेंस चेक करने, बैंक स्टेटमेंट जेनरेट करने, अन्य उपयोग के लिए किया जा सकता है।

*99# भुगतान सेवा का मुख्य उद्देश्य समाज के कमजोर और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के वित्तीय समावेशन की अनुमित देना और उन्हें बैंकिंग की मुख्य धारा में एकीकृत करना है। इस सेवा को सभी के लिए सुलभ बनाने के प्रयास में, यह सेवा 12 भाषाओं में उपलब्ध है, जिनमें अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं जैसे कि हिंदी, तमिल, बंगाली और कन्नड़ शामिल है।

यूएसएसडी एक प्रौद्योगिकी मंच है जिसके माध्यम से एक बेसिक फोन पर जीएसएम नेटवर्क के माध्यम से सूचना प्रसरित की जा सकती है। यह सेवा सभी मोबाइल फोन पर एसएमएस सुविधा के साथ उपलब्ध होगी। यूएसएसडी मोबाइल बैंकिंग का उपयोग करने के लिए, उपयोगकर्ताओं को बस *99# डायल करना होगा और इंटरैक्टिव मेनू का उपयोग करना होगा। भारत में कई बैंक हैं जो वर्तमान में *99# सेवा प्रदान कर रहे हैं।

यूएसएसडी द्वारा दो प्रकार की सेवाएँ प्रदान की जाती हैं-

Financial Services (वित्तीय सेवाएँ) (इसके माध्यम से फंड ट्रांसफर)–	Non-Financial Services(गैर–वित्तीय सेवाएँ)
• MMID एमएमआईडी • Aadhaar आधार • Account Number खाता संख्या	• बैलेंस पूछताछ • मिनी स्टेटमेंट • ओटीपी जेनेरेशन • MPIN जेनेरेशन और बदलना

www.adityainstitute.org

USSD के लिए MMID, MPIN और पंजीकृत मोबाइल नंबर आवश्यक होते हैं। प्रत्येक भाषा के लिए अलग युएसएसडी कोड हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी (*99#), हिन्दी (*99*22#) आदि।

Cards (Credit/Debit कार्ड (क्रेडिट / डेबिट)

जैसा कि हमने पहले चर्चा की हैं, ई-कामर्स साइटें इलेक्ट्रानिक भुगतान का उपयोग करती हैं, जहाँ इलेक्ट्रानिक भुगतान ने कागजी-रहित मौद्रिक लेनदेन को दर्शाता है। इलेक्ट्रानिक भुगतान ने कागज कार्रवाई, लेनदेन की लगता और श्रम लागत को कम करके व्यापार प्रोसेसिंग में क्रांति ला दी हैं। उपयोगकर्ता के अनुकूल होने और मैन्युअल प्रोसेसिंग की तुलना में कम समय लेने वाली होने के कारण, यह व्यवसाय संगठन को अपने बाजार का विस्तार करने में मदद करता है।

नीचे सूचीबद्ध इलेक्ट्रानिक भुगतान के कुछ तरीके हैं-

- **Credit Card (क्रेडिट कार्ड)**
- **Debit Card (डेबिट कार्ड)**
- **Smart Card (स्मार्ट कार्ड)**
- **Electronic Fund Transfer (EFT) इलेक्ट्रानिक फंड ट्रांसफर (EFT)**

क्रेडिट कार्ड द्वारा भुगतान इलेक्ट्रानिक भुगतान के सबसे सामान्य तरीकों में से एक है। क्रेडिट कार्ड एक छोटा प्लास्टिक कार्ड होता है जिसमें किसी खाते के साथ एक अद्वितीय संखया (unique number) जुड़ी होती है। इसमें एक मैग्नेटिक स्ट्रिप या चिप भी लगा होता है जिसका उपयोग कार्ड रीडर के माध्यम से क्रेडिट कार्ड को पढ़ने के लिए किया जाता है। जब कोई ग्राहक क्रेडिट कार्ड के माध्यम से उत्पाद खरीदता है, तो क्रेडिट कार्ड जारीकर्ता बैंक ग्राहक की ओर से भुगतान करता है और ग्राहक के पास एक निशिचत समय अवधि होती है जिसके बाद वह क्रेडिट कार्ड मासिक भुगतान चक्र है। क्रेडिट प्रणाली में निम्नलिखित शामिल हैं-

- कार्ड धारक – ग्राहक
- व्यापारी -उत्पाद का विक्रेता जो क्रेडिट कार्ड से भुगतान स्वीकार कर सकता है।
- कार्ड जारीकर्ता बैंक-कार्ड धारक का बैंक
- कार्ड ब्रांड-वीज़ा या मास्टरकार्ड (उदाहरण के लिए)

Credit Card Payment Process (क्रेडिट कार्ड भुगतान प्रक्रिया)

Step 1 बैंक ग्राहक को उसके अनुरोध पर क्रेडिट कार्ड जारी करता है और एक्टिवेट करता है।

Step 2 ग्राहक क्रेडिट कार्ड की जानकारी व्यापरी साइट पर या उस व्यापारी को प्रस्तुत करता है, जिससे वह उत्पाद खरीदना चाहता है।

Step 3 व्यापारी कार्ड ब्रांड कंपनी से अनुमोदन के द्वारा ग्राहक की पहचान को मान्य करता है।

Step 4 कार्ड ब्रांड कंपनी क्रेडिट कार्ड को प्रमाणित करती है और क्रेडिट द्वारा लेनदेन का भुगतान करती है। व्यापारी बिक्री पर्ची अपने पास रखता है।

Step 5 व्यापारी अधिग्रहण बैंक को बिक्री पर्ची सौंपता है और उससे भुगतान किया गया सेवा शुल्क प्राप्त करता है।

Step 6 अधिग्रहण बैंक ऋण राशि स्पष्ट करने के लिए कार्ड ब्रांड कंपनी का अनुरोध करता है और भुगतान हो जाता है।

Step 7 अब, कार्ड ब्रान्ड कम्पनी जारीकर्ता बैंक से राशि स्पष्ट करने के लिए पूछता है और राशि कार्ड ब्रांड कंपनी को हस्तांतरित हो जाता है।

Advantages and Disadvantages of Credit Cards (क्रेडिट कार्ड के लाभ और नुकसान)-

Advantages (लाभ)	Disadvantages (नुकसान)
• Rewards (पुरस्कार)	Interest and fees (ब्याज और फीस)
• Purchasing (खरीददारी)	Over expenses (ज्यादा खर्चा)
• Time Flexibility for Payment (भुगतान के लिए समय लचीलापन)	Fraud (धोखाधड़ी) www.adityainstitute.org
• Taraceability (ट्रेसेबिलिटी)	Mounting Debt (ऋण में वृद्धि)

Debit Card (डेबिट कार्ड)-

डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड की तरह, एक छोटा प्लास्टिक कार्ड होता है जिसमें बैंक खाता संख्या के साथ एक अद्वितीय संख्या होती है। बैंक से डेबिट कार्ड प्राप्त करने से पहले बैंक खाता होना आवश्यक है। डेबिट कार्ड और क्रेडिट कार्ड के बीच मुख्य अंतर यह है कि डेबिट कार्ड के माध्यम से भुगतान के मामले में, राशि तुरंत कार्ड के बैंक खाते से काट ली जाती है और लेनदेन पूरा होने के लिए बैंक खाते में पर्याप्त शेष राशि होनी चाहिए, क्रेडिट कार्ड लेनदेन के मामले में, ऐसी कोई बाध्यता नहीं है।

डेबिट कार्ड्स का इस्तेमाल करके ग्राहक कैश और चेक ले जाने से बच सकता है। यहाँ तक कि व्यापारी आसानी से डेबिट कार्ड स्वीकार करते हैं। डेबिट कार्ड भी बहुउद्देशीय होता है,जो एटीएम कार्ड को नकद निकालने और चेक गारंटी कार्ड के रूप कार्य करता है। व्यापारी ग्राहको को "कैशबैक"/"कैशआउट" सुविधाएँ भी दे सकते हैं, जहाँ ग्राहक अपनी खरीदारी के साथ-साथ नकदी भी निकाल सकते हैं।

Aditya Institute of Information Technology- AIIT

e-Wallet (ई-वालेट)

ई-वालेट एक प्रकार का इलेक्ट्रानिक कार्ड है, जिसका उपयोग कंप्यूटर या स्मार्टफोन के जरिए ऑनलाइन किए गए लेनदेन के लिए किया जाता है। इसकी उपयोगिता क्रेडिट या डेबिट कार्ड के समान है। भुगतान करने के लिए व्यक्ति के बैंक खाते के साथ एक ई-वालेट को जोड़ने की आवश्यकता होती है।

ई-वालेट विशेष रूप से उन ग्राहकों के लिए एक सुविधा है जिन्होंने माई एकाउंट प्रोफाइल पंजीकृत और स्थापित किया है। ई-वालेट तेजी से भुगतान करने के लिए कई क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड और बैंक खाते की जानकारी संग्रहित करने की क्षमता प्रदान करता है। आप बचत खातों के बना सकते हैं। आप इन प्रोफाइल को आवश्यकतानुसार एडिट और हटा सकते हैं। माई अकाउंट में लाग इन करने के बाद भुगतान करते समय, आप अपने क्रेडिट या बैंक खाते की जानकारी स्वचालित रूप से भरकर समय की बचत करेंगे।

Setting up an e-Wallet (इ-वालेट एकाउन्ट स्थापित करना)

ई-वालेट खाता स्थापित करने के लिए, उपयोगकर्ता को अपने डिवाइस पर साॅफ्टवेयर इंस्टाल करना होता है और आवश्यक प्रासंगिक जानकारी दर्ज करनी होती है। ऑनलाइन खरीदारी करने के बाद, ई-वालेट स्वचालित रूप से भुगतान

फार्म पर उपयोगकर्ता की जानकारी भरता है। ई-वालेट को सक्रिया करने के लिए, उपयोगकर्ता को अपना पासवर्ड दर्ज करना होता है। एक बार ऑनलाइन भुगातन हो जाने के बाद, उपभोक्ता को किसी अन्य वेबसाइट पर ऑर्डर फार्म भरने की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि डेटाबेस में जानकारी संग्रहित हो जाती है और स्वचालित रूप से अपडेट हो जाती है।

Types of e-Wallet (ई-वालेट के प्रकार)

- **Paytm (पेटीएम):**

पेटीएम भारत में सबसे लोकप्रिय ई-वालेट है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इसे अनुमोदित और अधिकृत किया, यह भारत में मौजूद सबसे बहुमुखी मोबाइल वालेट में से एक है। पेटीएम आज 4 बिलियन डालर की कंपनी है और या अपना खुद का ईकामर्स प्लेटाफार्म भी पेश करती है यह न केवल ऑनलाइन भुगतान की अनुमति देता है, बल्कि ऑफलाइन भुगतान विकल्प भी लेकर आया है, जहाँ पैसे ट्रांसफर करने के लिए सक्रिय इंटरनेट कनेक्शन की आवश्यकता नहीं है। यह केवल किया जा सकता है जो ऐप के भीतर उत्पन्न होता है। हम पेटीएम के बड़े समय के प्रशंसक है और दैनिक आधार पर इसका उपयोग करते हैं। पेटीएम इतना बढ़ गया है की पेटीएम को भुगतान बैंक स्थापित करने का लाइसेंस दे दिया है। इसका मतलब यह है कि पेटीएम जल्द ही बचत और चालू बैंक खाता, डेबिट कार्ड जारी करने और इंटरनेट बैंकिंग की पेशकश कर सकता है।

- **Citurs Wallet (साइट्रस वालेट):**

यह एक लोकप्रिय भुगतान गेटवे है। मूवीज, डिनर और ड्रिंक बिल पेमेंट, मनी ट्रांसफर – सब कुछ केवल कुछ टैप्स के साथ, यह साइट्रस वालेट भारतीय रिजर्व बैंक से लाइसेंस प्राप्त किया है। 21 मिलियन युजर बेस के नेटवर्क को समेटते हुए, साइट्रस वालेट समृद्ध है और यहाँ तक कि दोस्तों के साथ बिलों को विभाजित करने की अनुमति देता है।

Aditya Institute of Information Technology- AIIT

- **SBI Buddy (एस.बी.आई. बडी):**

वो जिसने भारतीय स्टेट बैंक का नाम नहीं सुना है। हाँ, यह बैंक उन लोगों के लिए एक पूर्ण ई-वालेट ऐप भी प्रदान करता है। जो डिजिटल वालेट का उपयोग करना पसंद करते हैं। यह 13 भाषाओं में उपलब्ध है, यह वालेट पैसे भेजने, पेसे माँगने, मोबाइल और डीटीएच सेवाओं को रिजार्ज करने, यूटिलिटी बिलों का भुगतान करने, सिनेमा टिकट बुक करने, होटल और उड़ानें आदि की अनुमति देता है। एसबीआई बडी के सबसे अच्छे प्रोडक्ट में से एक यह है कि आप वास्तव में अपने इंटरनेट बैंकिंग के द्वारा आप अपने बाडी खाता को सुपरचार्ज कर सकते हैं। एक बार इंटरनेट बैंकिंग सक्षम हो जाने के बाद, आप वास्तव में अपने वॉलेट में Rs 50,000 का बैलेंस रख सकते हैं; प्रतिदिन Rs 50,000 तक और महीने में Rs 1,00,000 तक के लेनदेन कर सकते हैं। हालांकि, इस तरह की उच्च सीमा के लिए आपको एसबीआई ग्राहक होने की आवश्यकता है।

- **MobiKwik (मोबिक्विक):**

यह ई-वालेट ई-वालेट इकोसिस्टम का एक और प्रमुख खिलाड़ी है। यह भुगतान के विकल्पों की मेजबानी भी प्रदान करता है। और डोमिनोज पिज्जा, बिग बाजार, पिज्जा हट, Jabong, Shop Clues, Naaptol, MakeMyTrip, Pepper fry, BookMyShow और अधिक जैसे कई लोकप्रिय और प्रसिद्ध ब्रोडों के साथ भागीदारी की है। इस ई-वालेट में भारतीय रिजर्व बैंक का प्राधिकरण और लाइसेंस भी है, जो इसे भारतीय बाजार में मौजूद सबसे भरोसेमंद मोबाइल वालेट में से एक बनाता है।

- **ItzCash:**

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अधिकृत, एक मोबाइल वालेट है, जो कि ItzCash Card Ltd. द्वारा संचालित है, जो एस्सेल ग्रुप का हिस्सा है, जो 2.4 बिलियन डालर के करोबार का समूह है, ItzCash बैंक खाते में सुरक्षित मनी ट्रांसफर विकलप के साथ एक समग्र भुगतान समाधान प्रदान करता है। यह एक डिजिटल लेनदेन की अनुमति देता है जैसे बैलंस ट्रांसफर, प्रीपेड मोबाइल रिचार्ज, मूवी टिकट खरीदे, रेलवे टिकट बुकिंग आदि।

- **Oxigen Wallet (आक्सीजन वालेट):**

20 मिलियन से अधिक उपयोगकर्ता आधार होने का दावा करके हुए, या मोबाइल वालेट भारत में सबसे लोकप्रिय मोबाइल वालेट्स में से एक है। MobiKwik और Paytm की तरह, ऑक्सीजन वालेट भी RBI द्वारा अनुमोदित है और यह वास्तव में पहला गैर-बैंक वालेट होने का दावा करता है जो तत्काल भुगतान करने की अनुमति देने के लिए नेशनल पेमेंट्स कार्पोरेशन ऑफ इंडिया या NCPI के साथ गठजोड़ करने में कामयाब रहा है। इसका मतलब है कि मनी ट्रांसफर वालेट की सबसे मजबूत विशेषताओं में से एक है। इसके मनी ट्रांसफर फीचर के बारे में एक बात आपको पता होनी चाहिए कि यह तत्काल पैसे ट्रांसफर की अनुमति देने के लिए एनसीपीआई के साथ करार किया है। एकल लेनदेन में अधिकतम INR 5,000 तक सीमित है और एक महीने में, INR 10,000 से अधिक नहीं स्थानांतरित किया जा सकता है।

- **HDFC PayZapp (एचडीएफसी PayZapp):**

अगर हम ऐप को ही देखें, तो हमार मतलब है कि ऐप को कितनी अच्छी तरह से बनाया गया है, यह बाजार के कुछ अन्य ऐप की तुलना में बहुत ठोस और कम बग है। हालाँकि, जब हम दी जाने वाली सेवाओं के लिए आते हैं, तो एचडीएफसी PayZapp उतना महान नहीं है। यह एक मोबाइल वालेट होने के नाते वास्तव में बिल भुगतान, मोबाइल रिचार्ज, डीटीएच रिचार्ज जैसे बुनियादी चीजों की अनुमति देता है। यह ई-कामर्स साइटों से खरीदारी करने की अनुमति देता है और यह वास्तव में आपको ई-काॅमर्स कंपनियों के उत्पादों को सीधे अपने स्वयं के इंटरफेस से ब्राउज करने की अनुमति देता है।

- **ICICI Pockets (आईसीआईसीआई):**

आईसीआईसीआई बैंक द्वारा निर्मित और संचलित, पाकेट्स एक और अत्यधिक लोकप्रिय डिजिटल वालेट है। यह डिजिटल वालेट VISA द्वारा संचालित है। यह केवल एक ही बैंक यानी ICICI बैंक के उपयोकर्ताओं तक सीमित नहीं है। दरअसल, किसी भी बैंक का उपयोगकर्ता इस वालेट का उपयोग कर सकता है और खाते में 20,000 शेष राशि ले सकता है। यह ICICI बैंक के साथ बचत खाते के लिए आवेदन करने की एक अनूठी विशेषता के साथ आता है। यह बचत बैंक खाता आपको संतुलन बनाए रखने, उसी पर ब्याज कमाने और यहाँ तक कि खाते का उपयोग करके नकदी निकालने की अनुमति देगा। इस बचत खाते को पाकेट सेविंग अकाउंट के रूप में जाना जाता है। एक पाकेट में 60000 व्यापारी होते हैं।

- **Advantages of e-Wallet (ई-वालेट खाते के फायदे)**

डिजिटल वालेट का इस्तेमाल करने से मध्यस्थों की जरूरत कई तरह के रूपों में दूर हो जाती है। स्टोर में खरीदारी के लिए अब कैशियर की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि खरीदारी की प्रक्रिया मोबाइल डिवाइस के टैप या स्कैन की तरह सरल हो जाती है। गूगल पे जैसे एप्लिकेशन महँगे PoS (point of sale) सिस्टम को बदल सकते हैं जो व्यापार के लिए लेनदेन की लागत को कम करेगा।

Competitive Advantage (प्रतिसपर्धात्मक लाभ):

डिजिटल वालेट एप्लीकेशन ग्राहकों के लिए एक अधिक सुविधाजनक लेन-देन प्रोसेसिंग विधि प्रदान करते हैं, जो इस तकनीक को बाजार में प्रतिस्पर्धा में बढ़त देने वाले व्यवसाय प्रदान करते हैं। यह भुगतान के उपयोगकर्ता अनुभव को फिर से परिभाषित करता है और प्रत्येक खरीद के लिए एक नए पहलू को शामिल करता है।

Modern (आधुनिक)

यह बड़े बाजारों में भुगतान के तरीकों के लिए एक पूरी तरह से नया पहलू दिखाता है, कई व्यापार के अवसरों और अधिक से अधिक संभावित राजस्व को पेश करता है।

Convenience (सुविधा)

उपयोगकर्ता अपने मोबाइल डिवाइस के एक साधारण टैप या स्कैन के साथ मात्र सेकंड में खरीद पाने में सक्षम हैं। वस्तुओं की खरीद का अनुभव जल्दी और आसान हो जाता है-जिससे संतुष्टि की अधिक भावना पैदा होती है। इसके अलावा, तेजी से लेन-देन के साथ, दुकानों के भीतर चेकआउट लाइनें बहुत कम हो जाती हैं।

- **Disadvantages of e-Wallet (ई-वालेट खाते के नुकसान)**

Investment (निवेश)

एक कार्यात्मक डिजिटल वालेट एप्लीकेशन के निर्माण के लिए प्रारंभिक मौद्रिक निवेश काफी बड़ा है। इसके लिए साफ्टवेयर के प्रारंभिक विकास के साथ-साथ निरतंर रखरखाव, अपडेट और इसके साथ जुड़े सुधारों की आवश्यकता होती है। साफ्टवेयर प्राप्त करने पर, व्यवसाय को अपने स्टोर में सम्बन्धित हार्डवेयर स्थापित करने की भी आवश्यकता होगी, जिससे लागत में और वृद्धि होगी।

Support Technology (सपोर्ट टेक्नोलाजी)

डिजिटल वालेट के मामले में, वे केवल प्रत्येक एप्लिकेशन के लिए सम्बन्धित हार्डवेयर डिवाइस के साथ कार्य कर सकते हैं। एनएफसी टर्मिनल और विशेषज्ञ स्कैनर इस बनाए गए एकमात्र उपकरण हैं जो डिजिटल वालेट भुगतान के प्रोसेसिंग का समर्थन करेंगे। इस प्रकार, यह बहुत सीमित है, क्योंकि तकनीक अभी भी नई है।

System Outages (सिस्टम आउटेज) –

डिजिटल वालेट के लिए सूचना व्यापार सर्वर के क्लाउड पर संग्रहित की जाती है। इसलिए, सिस्टम में खराबी या बंद होने का जोखिम हमेशा मौजूद होता है। परिणामस्वरूप, व्यवसाय भुगतानों को संसाधित करनें में सक्षम नहीं होंगे या सर्वर में उच्च यातायात के कारण वे तेजी से धीमे हो जाएँगे।

Security (सुरक्षा) –

कंपनियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके ग्राहकों की जानकारी एन्क्रिप्ट और अच्छी तरह से संरक्षित है। यह वह बाधा है जिसका कंपनियों को सामना करना चाहिए और इसके परिणामस्वरूप, सुरक्षा प्रणालियों को विकसित करना चाहिए जो संभावित सुरक्षा मुद्दों से बचने लिए यथासंभव सुरक्षित और पूर्ण सबूत हैं।

Point of Sale (पाइंट आफ सेल) / PoS (पी ओ एस)

पाइंट ऑफ सेल, जिसे पाइंट आफ परचेज भी कहा जाता है। यह वह स्थान है जहाँ लोग खरीदते और बेचते हैं। किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में, वह स्टेज जब भुगतान किसी वस्तु या सेवा के एवज में किया जाता है, पाइंट ऑफ सेल (PoS) के रूप में जाना जाता हैं यह एक डेबिट कार्ड या क्रेडिट कार्ड का उपयोग करके किया जा सकता है।

What is PoS System? (PoS सिस्टम क्या है?)

PoS वह जगह है जहाँ लेनदेन होता है। PoS प्रणाली लेनदेन करने का उपकरण है। मूल रूप से, पीओएस सिस्टम एक पूर्ण लेनदेन प्रक्रिया बनाने के लिए हार्डवेयर और साफ्टवेयर का संयोजन है।

हाल ही में, PoS सिस्टम को a point of services के लिए भी संदर्भित किया गया है। यह सिर्फ a point of sale नहीं है, बल्कि a point of returning (ग्राहकों की वापसी) भी है। इस प्रकार, पीओएस सिस्टम में इन्वेंटरी मैनेजमेंट, सीआरएम, अकाउंटिंग और वेयरहाउसिंग जैसे अतिरिक्त कार्य भी शामिल हो सकते हैं।

संक्षेप में, आधुनिक पीओएस सिस्टम = साफ्टवेयर + हार्डवेयर + अतिरिक्त कार्य

Aditya Institute of Information Technology- AIIT

PoS Hardware (PoS हार्डवेयर)

ये निम्नलिखित हैं-

1. **Barcode Scanner** (बारकोड स्कैनर)
2. **Credit Card Reader** (क्रेडिट कार्ड रीडर)
3. **Receipt Printer** (रसीद प्रिंटर)
4. **Register Screen** (रजिस्टर स्क्रीन)
5. **Cash Drawer** (नकद दराज)

PoS Software (PoS साफ्टवेयर)

PoS Software आपको व्यवसाय का प्रबंधन करने और सभी लेनदेन को नियंत्रित करने में मदद करता है। यह ग्राहकों, उत्पादों, सूची, बिक्री, वफादारी कार्यक्रमों और श्रम से आवश्यक डेटाबेस को स्वचालित रूप से, अपडेट करता है।

Types of PoS System (PoS प्रणाली के प्रकार)

- **Retail PoS (रिटेल PoS)**

रीटेल PoS सिस्टम आमतौर पर रिटेल वातावरण के लिए प्रोग्राम किया जाता है। खुदरा PoS प्रणाली में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

- **Hardware (हार्डवेयर)** – रजिस्टर स्क्रीन, बारकोड स्कैनर, क्रेडिट कार्ड रीडर, रसीद प्रिंटर और कैश दराज (ऑफलाइन स्टोर के लिए)
- **Software (साफ्टवेयर)** – क्लाउड-आधारित पीओएस (वेब-आधारित पीओएस और मोबइल पीओएस ऐप दोनों की सिफारिश की जाती है, यदि आपके स्टोर ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों हैं। यदि आपका स्टोर केवल ऑनलाइन उपलब्ध है, तो मोबाइल पीआएस ऐप सबसे अच्छाा विकल्प होना चाहिए।
- **Add-on features (ऐड-ऑन विशेषताएँ)** – रंग-आकार-प्रकार का चयन, इन्वेंट्री टैकींग, उपहार रजिस्ट्री, ग्राहक डेटाबेस, लेअवे और खरीद ऑर्डर, और कर्मचारी कमीशन। विशेष रूप से, इसकी बिक्री रिपोर्ट, ग्राहक रिपोर्ट, विक्रेता रिपोर्ट, और इन्वेंट्री रिपोर्ट जैसे संपूर्ण रिपोर्ट जारी करने के लिए एक सुविधा होनी चाहिए।
- तृतीय-पक्ष एकीकरण (लेखांकन साफ्टवेयर, शिपिंग विक्रेता,आदि के साथ एकीकृत करने में सक्षम)
- **Restaurant & Bar PoS (रेस्टारेन्ट और बार Pos)**

बड़ी मात्रा और "क्रेजी" गति को संभालने के लिए रेस्तरां और बार में पीओएस सिस्टम पर्याप्त मजबूत होना चाहिए। इसकी निम्नलिखित विशेपताएँ हैं-

- **Hardware (हार्डवेयर)** – रजिस्टर स्क्रीन, क्रेडिट कार्ड रीडर, रसीद प्रिंटर और कैश दराज।
- **Software (साफ्टवेयर)** – आधार पर, सिस्टम को ऑफलाइन काम करने में सक्षम होना चाहिए, बुनियादी ग्राहक डेटाबेस, बिक्री और कर डेटा को टैक करना चाहिए।
- **Workflow Integration (वर्कफ्लो इन्टीग्रेशन)** – ऑर्डर प्रोसेसिंग और किचन सेटआप के बीच सम्बधन। रेस्तारां कर्मचारी आसानी से विभिन्न प्रीप स्टेशनों के बीच रसोई के ऑर्डर को विभाजित कर सकते हैं।
- **High Speed (हाईस्पीड)** – व्यस्त बार/ रेस्तरां से निपटने में सक्षम। जितनी तेजी से यह है, सबसे ज्यादा खुश ग्राहक हैं।
- **Flexibility (फ्लैक्सीबीलिटी)** – आप आसानी से और जल्दी से ग्राहकों के आदेशों को संशोधित कर सकतें हैं और सीट नंबर की जाँच कर सकते हंै।
- **Simple to use (यूज़ में सरल)** – सरल बटन और तेज पहुँच। यह आपके कर्मचारियों को तेजी से सेवा देने में मदद करेगा।
- **Spa and Resort PoS (स्पा और रिसार्ट PoS)**

नाखून सैलून, आल सैलून और स्पा सभी को व्यवसाय की प्रकृति के कारण पीओएस विकल्पों के एक विशेष सेट की आवश्यकता होती है।

Internet banking (इन्टरनेट बैंकिंग)

- खाता विवरण, विवरण इतिहास, हाल ही में किए गए लेन-देन।
- क्रेडिट कार्ड बिल का भुगतान।
- भुगतान किए गए चैकों का विवरण और चैक बुक को ऑर्डर करना।
- आयकर का भुगतान और करों का ऑनलाइन प्रेषण।
- म्यूचुअल फंड्स में निवेश और बीमा कराना।
- बिलों का भुगतान।
- ग्राहकों के खातों में धन का स्थानांतरण।
- माँगा पत्र जारी करवाना।

NEFT/RTGS (एन ई एफ टी/आर टी एस)

- **NEFT:**

एन ई एफ टी एक इलेक्ट्रीनिक धन स्थानांतरण का माध्यम है जिसका रख-रखाव आर बी आई द्वारा किया जाता है। इसका प्रयोग करके व्यक्ति देश के किसी भी शहर की किसी भी बैंक शाखा से देश के किसी भी दुसरे शहर की बैंक शाखा में धन स्थानांतरित कर सकता है। यह प्रति घंटा के बैचों में संचालित होता है। सुबह 8 बजे से शाम 5:30 बजे तक दिया गया स्थानांतरण निवेदन उसी दिन क्रियान्वित हो जाता है। इसकी अधिकतम सीमा Rs 10 लाख है और कोई भी न्यूनतम सीमा नहीं है।

- **RTGS:**

आर टी जी एस भी एन ई एफ टी के समान है किन्तु यह बड़े मूल्य के लेनदेन में प्रयोग होता है। इसकी न्यूनतम सीमा Rs 2 लाख और अधिकतम Rs 10 लाख है।

Process of NEFT and RTGS (एन ई टी और आर टी जी एस की प्रक्रिया)

- **Step 1:** ग्राहक एक आवेदन पत्र भरता है जिसमें लाभार्थी का विवरण (नाम, बैंक, बैंक शाखा, आई एफ एस सी कोड, खाता संख्या और राशि) भरा जाता है।
- **Step 2:** इस फार्म को भरने के बाद ग्राहक अपनें बैंक को अपने खाते में से बताई गई रकम प्राप्कर्ता के खाते में स्थानांतरित करने के लिए अधिकृत करता है।
- **Step 3:** ग्राहक की बैंक शाखा पूलिंग केन्द्र के लिए एक संदेश तैयार करती है। यह केन्द्र एन ई एफ टी सेवा केन्द्र कहलाता है।

- **Step 4:** एन ई टी सेवा केन्द्र संदेश को एन ई एफ टी समशोधन केन्द्र (जोकि आर बी आई द्वारा संचालित है) को भेजता है ताकि उसे अगले बैच में सम्मिलित किया जा सके।
- **Step 5:** समशोधन केन्द्र संदेशों को गंतव्य बैंक के आधार पर अलग करता है। और मूल बैंक से धन प्राप्त करने और गंतव्य बैंक को धन देने के लिए प्रविष्टियाँ तैयार करता है।
- **Step 6:** एन ई एफ टी केन्द्र द्वारा बैंक के आधार पर धन स्थानांतरण से देशों को गंतव्य बैंकों को भेजा जाता है।
- **Step 7:** समाशोधन बैंक द्वारा प्राप्त इनवर्ड फंड ट्रांसफर संदेश को प्राप्त कर जमा की गई राशि को प्राप्तकर्ता के खाते में जमा कर दिया जाता है।

No Credit Eligibility (कोई क्रेडिट पात्रता नहीं)

IMPS का अर्थ भारतीय बैंकिंग प्रणली शब्दावली में तत्काल भुगतान सेवा है। यह देश के शीर्ष बैंक, भारतीय रिजर्व बैंक और भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI) द्वारा उपलब्ध कराया गया धन हस्तांतरण तंत्र है। 4 प्रमुख बैंकों के साथ पायलट प्रोजेक्ट की मदद से NPCI 2010 में शुरू की गई, IMPS अब 150+ बैंकों की हो गई है।

NEFT और RTGS ट्रांसफर तंत्र केवल उनके व्यावसायिक घंटों के दौरान उपलब्ध होते हैं। हालांकि, IMPS हेमश 24*7 उपलब्ध रहता है।

Fund transfer by IMPS (IMPS द्वारा फंड ट्रांसफर करना)

IMPS आपके फंड को नेट-बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग प्लेटफार्म के माध्यम से स्थानांतरित कर सकता है।

- नेट-बैंकिंग के माध्यम से IMPS ट्रांसफर की प्रक्रिया इस प्रकार है-
    - अपने बैंक के नेट-बैंकिंग पोर्टल में प्रवेश करें।
    - लाभर्थी के खाता संख्या, खाता प्रकार, IMPS कोड, नाम और संपर्क विवरण का इनपुट करके एक IMPS लाभार्थी जोडें।
    - आपके बैंक द्वारा यह पुष्टि करने के बाद कि लाभार्थी को शामिल किया गया है, फंड ट्रांसफर पर जाएँ और फिर उस लाभार्थी का चयन करें, जिसे आप फंड ट्रांसफर करना चाहते हैं।
    - एक बार जब आप ऐसा करते हैं कि लाभार्थी का खाता विवरण दिखाई देगा, तो राशि और रिमाक्र्स (वैकल्पिक) दर्ज करें।
    - भुगतान सत्यापित करें और आपका फंड IMPS के माध्यम से तुरन्त स्थानांतरित हो जाएगा।
- मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से IMPS ट्रांसफर की प्रक्रिया इस प्रकार है-
    - अपनें बैंक के मोबाइल बैंकिंग एप्लिकेशन में लाग इन करें।
    - लाभार्थी जोडे यदि पहले से नहीं जोड़ा गया है।
    - लाभार्थी के जुड़ जाने के बाद, Send Money / Fund Transfer टैब पर क्लिक करें और IMPS विकल्प पर जाएँ ।
    - अब लाभार्थी का मोबाइल नम्बर, राशि और लाभार्थी MMID दर्ज करें।
    - तब एप्लीकेशन आपके मोबाइल पिन (MPIN) द्वारा ट्रांसफर को प्रमाणित करने के लिए पूछेगा, एक बार जब आप अपना मोबाइल पिन सत्यापित कर लेते हैं, तो आपका पैसा ट्रांसफर हो जाएगा। और फिर बैंक आपको ट्रांजेक्शन नम्बर का उल्लेख करते हुए एक कन्फर्मेशन मैसेज भेजेगा।

Online Bill Payment (आनलाइन बिल भुगतान)

आप भारत के किसी भी बैंक के नेट बैंकिंग, एटीएम या मोबाइल सेवा के माध्यम से इस सेवा का लाभ उठा सकते हैं।

उदाहरण – माल लीजिए कि कोई उपयोगकर्ता ऑनलाइन सुविधा के माध्यम से एसबीआई के अपने क्रेडिट कार्ड के बिल का भूगतान करना चाहता है। फिर, उसे SBI की ऑनलाइन बिल भुगतान प्रक्रिया के कुछ चरणों का पालन करना होंगा।

Step 1: उपर्युक्त बैंकों के नेट बैंकिंग पेज पर लाग इन करें जहाँ आपका बैंक खाता है।

Step 2: एक बिलर के रूप में ' SBI कार्ड' को जोड़ें।

Step 3: अपने कार्ड नम्बर और भुगतान राशि के बारे में विवरण भरें और भुगतान करें।

धन्यवाद !
आर जे एडवोकेट (CEO AIIT)

1. OTP का पूर्ण रूप बताइए ?
    - **One time password**
    - one time passcode
    - one time parameter
    - none
2. Q R कोड का पूर्ण रूप बताइये ?
    - **quick response code**
    - quick resposible coding
    - quick response codind
    - none
3. UPI का पूर्ण रूप बताइये ?
    - unified project agency
    - unified project internatinol corporation
    - **unified payment interface**
    - none
4. AEPS किस संस्था द्वारा विकसित किया गया ?
    - NCPC

- NIPC
- NCPI
- **NPCI**

5. NPCI का पूर्ण रूप बताइये ?
   - national protocol corporation
   - **national payment corporation of india**
6. USSD को हम कितनी भाषाओ में प्रयोग कर सकते है ?
   - **12**
   - 15
   - 18
   - 9
7. AEPS का पूर्ण रूप बताइये ?
   - adhar entry payment system
   - adhar enable processing system
   - **adhar enabled payment system**
   -
8. AEPS के माध्यम से हम कितनी सेवाओ का लाभ उठा सकते है ?
   - 4
   - **6**
   - 8
   - 10
9. EFT का पूर्ण रूप बताइये?
   - electric fund transfer
   - **electronic fund transfer**
   - electronic transfer
   - none
10. इनमे से 4 मिलियन डोलर की कंपनी कोन सी है ?
    - **पेटियम patium**
    - SBI BUDDY
    - phonepay
    - इनमे से कोई नहीं
11. SBI buddy wallet में हम अधिकतम कितना बैलेंस रख सकते है |
    - **1,00000**
    - 50,000
    - 80,000
    - 10,000
12. NEFT का पूर्ण रूप क्या है ?

- NATINOL enable fund transfer
- **national electronic fund transfer**
- national enable project
- none

13. RIGS का पूर्ण क्या है ?

- real time gross salary
- real time settlement
- none
- **real time gross settlement**

14. kyc का पूर्ण बताइये ?

- **know your customer**
- know your cash
- knowlege of your customer
- none of these

15. MMID का पूर्ण रूप क्या है ?

- mobile money idntity
- **mobile money identifer**
- both
- none

16. IMEI का पूर्ण रोप क्या है ?

- internet mobile equipment identity
- internation mobile electronic identity
- **internation mobile equipment identity**
- none

17. बैंकिंग शेत्र में अधिक संख्या में चेको के तेज़ निस्तारण में सहायता करता है ?

- CMR
- OCR
- BAR CODE reader
- **MICR**

18. मोबाइल बैंकिंग में संभव है ?

- खाते की बचत राशि देखना
- बिजली बिल भुगतान
- फण्ड ट्रांसफर
- **उपर्युक्त सभी**

19. bank दावा —– का ब्याज दिया जाता है ?

- loans
- **deposits**
- transactions
- withdraw

20. इन्टरनेट बैंकिंग का कार्य नहीं है ?

- **खाते से नकद निकालना**
- खाते का विवरण देखना
- श्रण के लिए आवेदन करना
- हाल ही के कार्य का विवरण देखना

धन्यवाद !

आर जे एडवोकेट (CEO AIIT)